وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝٣١
يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٣٢ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ
اَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝٣٣ وَاذْكُرْنَ مَا
يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝٣٤

आयत नं० 31 से 34

और (ऐ नबी की बीवियों) **तुम में से जो कोई अल्लाह की और उसके रसूल की ताबेदार रहेगी** (यानी जिन कामों को अल्लाह तआ़ला ने वाजिब किया है उनको अदा करेगी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हक़ अदा करेगी) **और** (दूसरे) **नेक काम करेगी तो हम उस का सवाब** (भी) **दोगुना देंगे और हमने उसके लिए** (इस दोगुने सवाब के सिवा) **एक** (ख़ास) **अच्छी रोज़ी तैयार कर रक्खी** (है जो जन्नत में ख़ास नबी की बीवियों के लिए है जो नेकियों के बदले से ज़्यादा है और नेकियों पर दो गुना सवाब और बुराइयों पर दो गुना अज़ाब होने की वजह नबी की बीवियों का रूतबा बड़ा होना) **है(31) ऐ नबी की बीवियों तुम आम औरतों की तरह नहीं हो** (तुम्हारा रूतबा बड़ा है लेकिन सिर्फ़ इस पर भरोसा करके न बैठा जाए कि हम नबी की बीवियां हैं बल्कि परहेज़गारी और ताबेदारी ज़रूरी है तो) **अगर तुम परहेज़गारी पर चलो तो** (तुम को शरीअत के हुक्मों की पूरी पाबन्दी करना चाहिए कि) **तुम** (नामहरम मर्द से) **बोलने में** (जब कि ज़रूरत से बोलना पड़े तो नर्मी और) **नज़ाकत** (से बात) **मत करो** (जैसा कि नर्मी से बात करना औरतों की फ़ितरत होती है) **कि** (इस अन्दाज़ से बात करने में) **ऐसे आदमी को** (दिल में बुरा) **ध्यान** (पैदा) **होने लगता है जिस के दिल में ख़राबी** (और बुराई) **है** (बल्कि ऐसे मौक़े पर उस अन्दाज़ को बदल कर सपाट लहजे में बात करो) **और बात वो कहो जो भलाई वाली हो(32) और** (आगे पर्दे के बारे में हुक्म है कि) **तुम अपने घरों में चैन से रहो और पुराने** (यानी इस्लाम से पहले के) **जहालत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ मत फिरो** (कि उस वक़्त पर्दे का दस्तूर न था यानी अगर ज़रूरत से बाहर जाना हो तो ऐसे पर्दे के साथ निकलो जिसमें बदन के साथ-साथ लिबास भी दिखाई न दे) **और** (दूसरे हुक्मों का भी ध्यान रक्खो कि) **तुम नमाज़ों की पाबन्दी रक्खो और ज़कात** (अगर वाजिब हो) **दिया करो और** (सब हुक्मों में) **अल्लाह का और उसके रसूल का कहना मानो,** (और इसमें तुम्हारा ही

नफ़ा है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला यह चाहते हैं कि ऐ** (पैग़म्बर के) **घर वालो तुम से** (गुनाह व नफ़रमानी की) **गन्दगी को दूर रक्खे और तुम को** (हर तरह) **पाक-साफ़ रक्खे(33) और** (इन हुक्मों को जानने और याद रखने के लिए) **तुम इन अल्लाह की आयतों** (यानी क़ुरआन) **को और इस** (हुक्मों के) **इल्म को याद रक्खो और जिसका तुम्हारे घरों में चर्चा रहता है,** (और यह भी याद रक्खो कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला राज़ों का जानने वाला** (कि दिल के इरादों को भी जानता है और) **पूरा ख़बरदार** (है कि छुपी बातो को भी जानता है इसलिए खुली छुपी सब बातों में शरीअत की पाबन्दी ज़रूरी) **है(34)।**

नोटः- ऊपर आयत से साबित हो गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां एहले बैत यानी हुज़ूर के घर वालों में शामिल हैं जैसा कि कुछ शीआ लोग उन को एहले बैत में शामिल नहीं मानते यह ग़लत है।

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَ الْمُسْلِمٰتِ وَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَ الْقٰنِتِيْنَ وَ الْقٰنِتٰتِ وَ الصّٰدِقِيْنَ وَ الصّٰدِقٰتِ وَ
الصّٰبِرِيْنَ وَ الصّٰبِرٰتِ وَ الْخٰشِعِيْنَ وَ الْخٰشِعٰتِ وَ الْمُتَصَدِّقِيْنَ وَ الْمُتَصَدِّقٰتِ وَ الصَّآئِمِيْنَ وَ الصّٰٓئِمٰتِ وَ الْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَ الْحٰفِظٰتِ وَ الذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

आयत नं० 35

बेशक इस्लाम के काम करने वाले मर्द और इस्लाम के काम करने वाली औरतें और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें और (अल्लाह व रसूल की) **ताबेदारी करने वाले मर्द और ताबेदारी करने वाली औरतें और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें** (और सच्चाई में ईमान की सच्चाई भी आमाल की सच्चाई भी और ज़बान की सच्चाई भी सब आगईं) **और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें** (इसमें सब्र की सब क़िस्में आगईं यानी इबादतों की पाबन्दी पर जमे रहना और गुनाहों से अपने जी को रोकना और मुसीबतों पर सब्र करना) **और दिल से झुकने वाले मर्द और दिल से झुकने वाली औरतें** (इसमें नमाज़ में ध्यान लगाना भी और घमन्ड न करना भी सब आगया) **और सदक़ा** (ख़ैरात) **करने वाले मर्द और सदक़ा** (ख़ैरात) **करने वाली औरतें** (इसमें ज़कात व ख़ैरात सब आगया) **और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली**

औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और कसरत से अल्लाह को याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें उन सब के लिए अल्लाह तआ़ला ने बख़शिश और बड़ा इनआम तैयार कर रक्खा है(35)।

नोटः- एक हदीस में है कि ''किसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि जिहाद करने वालों में सबसे ज़्यादा सवाब किसका है तो आपने फ़रमाया जो सब से ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करे फिर पूछा कि रोज़ेदारों में किस का सवाब सबसे ज़्यादा है फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करे फिर इसी तरह नमाज़ ज़कात और हज व सदक़ा के बारे में सवाल किये हर बार आप ने ये ही फ़रमाया कि जो अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा करे वो ही सवाब का ज़्यादा हक़दार है''। (इब्ने कसीर)

और ज़िक्र सब इबादतों में सबसे ज़्यादा आसान है शरीअत ने भी इसके लिए कोई शर्त नहीं रक्खी वुज़ू बेवुज़ू लेटे बैठे चलते फिरते हर वक़्त में अल्लाह का ज़िक्र किया जा सकता है न इसमें मेहनत की ज़रूरत है न फ़ुर्सत की और असर व फ़ाइदा इसका इतना बड़ा है कि अल्लाह के ज़िक्र के साथ दुनिया के काम भी दीन व इबादत बन जाते हैं जैसे खाने से पहले व बाद की दुआ सफ़र की दुआ वग़ैरह।

وَ مَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّ لَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَ مَنْ
يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ؕ﴿۳۶﴾ وَ اِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَ اتَّقِ اللّٰهَ وَ تُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَ تَخْشَى النَّاسَ ۚ وَ اللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا
قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ
وَطَرًا ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلُ ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا ۙ﴿۳۸﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَ يَخْشَوْنَهٗ وَ لَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا
اللّٰهَ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾

आयत नं० 36 से 39

और किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औरत को जब अल्लाह और उसका रसूल किसी काम का हुक्म देदें (चाहे वो दुनिया की बात क्यों न हो फिर) **उन** (मोमिनों) **को उनके उस काम** (के बारे) **में** (करने न करने का) **कोई हक़ बाक़ी नहीं रहता** (बल्कि वो काम करना वाजिब हो जाता है)**, और जो आदमी** (हुक्म के बाद) **अल्लाह का और उसके रसूल का कहना न मानेगा वो खुली गुमराही में पड़ गया(36) और** (ऐ पैग़म्बर उस वक़्त को याद कीजिए) **जब आप** (समझाते हुए) **उस आदमी से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने भी इनआम किया** (कि इस्लाम की तौफ़ीक़ दी जो दीनी इनआम है और ग़ुलामी से छुड़ाया जो दुनिया की नेमत है) **और आप ने भी इनआम किया** (दीन सिखाया और आज़ाद किया और फूफी ज़ाद बहन से निकाह कराया मुराद इससे मुंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि० हैं कि आप उनको समझा रहे थे) **कि अपनी बीवी** (ज़ैनब) **को अपने निकाह में रहने दो** (और उसकी मामूली ग़लतियों पर ध्यान न दो) **और अल्लाह से डरो** (और उसके हक़ों में भी कमी न करो) **और** (जब शिकायतें हद से बढ़ गईं और सुधार की उम्मीद न रही तो उस वक़्त समझाने के साथ) **आप अपने दिल में वो बात** (भी) **छुपाए हुए थे जिस को अल्लाह तआ़ला** (आख़ीर में) **खोलने वाला था** (मुराद इससे आप का निकाह है हज़रत ज़ैनब से जब कि ज़ैद उनको तलाक़ देदें) **और** (इस सूरत में) **आप लोगों** (के ताने) **से** (भी) **डरते थे** (कि लोग कहेंगे कि अपने मुंह बोले बेटे की तलाक़ दी हुई औरत से निकाह कर लिया और इस काम के करने का दीनी फ़ाइदा क्या है उस वक़्त इस बात पर ध्यान नहीं किया होगा इसलिए लोगों के ऐतराज़ की फ़िक्र हुई) **और अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो** (बस फिर आप किसी से नहीं डरे)**, फिर जब ज़ैद का उस** (ज़ैनब) **से जी भर गया** (यानी तलाक़ देदी और इद्दत भी पूरी हो गई तो) **हम ने आप से उस का निकाह कर दिया ताकि मुसलमानों पर अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों** (से निकाह करने) **के बारे में कुछ तंगी न रहे जब वो** (मुंह बोले बेटे) **उन से अपना जी भर चुकें** (यानी तलाक़ देदें मतलब यह कि यह शरीअत का हुक्म खोलना था)**, और अल्लाह का यह हुक्म तो होने वाला ही** (था क्योंकि इसमें दीनी भेद छुपा) **था(37) इन पैग़म्बर के लिए अल्लाह तआ़ला ने जो बात तय कर दी उस में नबी पर कोई इल्ज़ाम** (और ताना देने की बात) **नहीं, अल्लाह तआ़ला ने उन** (पैग़म्बरों) **के हक़ में** (भी) **ये ही दस्तूर रक्खा है जो पहले हो चुके हैं** (कि उनको जिस काम की इजाज़त होती है बेझिजक वो उसको करते रहते हैं और उन पर कोई ऐतराज़ नहीं ऐसे ही इन नबी पर ऐतराज़ की गुन्जाइश नहीं)**, और** (उन पैग़म्बरों

के भी इस क़िस्म के जितने काम होते हैं उन सब के बारे में भी) **अल्लाह का हुक्म** (पहले से) **तय किया हुआ होता है**(38) **ये सब** (पहले पैग़म्बर) **ऐसे थे कि अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पहुंचाया करते थे और** (इस बारे में) **अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे** (बस आप भी किसी से न डरिए)**, और अल्लाह** (किये कामों का) **हिसाब लेने के लिए काफ़ी** (है फिर किसी से क्या डरना दूसरे आप को ताना देने और ऐतराज़ करने वालों को भी सज़ा देगा इसलिए तानों का ग़म करना बेकार) **है(39)।**

नोटः- हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि० हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुंह बोले बेटे थे हुजूर ने उनका निकाह अपनी फूफी ज़ाद बहन ज़ैनब रज़ि० से करने को कहा तो ज़ैनब रज़ि० के भाई इसके लिए तैयार नहीं थे मगर हुजूर के हुक्म को मानने की ताकीद मालूम हुई तो दोनों बहन भाई ख़ुशी से तैयार हो गये मगर निकाह के बाद उनका निबाह न हो सका तो वही से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया गया कि ज़ैद अपनी बीवी ज़ैनब को तलाक़ देंगे और ज़ैनब से आप का निकाह होगा यह वो बात है जो आप दिल में छुपाए हुए थे जिसको अल्लाह खोलने वाला था। उस ज़माने में अरब में दस्तूर था कि मुंह बोले बेटे को अपने बेटे की तरह समझा जाता था और मीरास में भी वो हिस्से दार होता था और उसकी बीवी से निकाह को बुरा समझते थे। इस्लाम में इस बात को मना किया गया इस दस्तूर को मिटाने के लिए यह काम नबी के ज़रिये से कराया गया ताकि किसी मुसलमान को ऐतराज़ की गुन्जाइश न रहे।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾

आयत नं० 40

(मुसलमानो) **मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन अल्लाह के रसूल** (होने की वजह से सारी उम्मत के रूहानी बाप) **हैं और** (सब नबियों में) **सब से आख़री नबी हैं, और** (अगर किसी को यह वसवसा और शक हो कि यह निकाह जाइज़ तो था लेकिन अगर न होता तो अच्छा होता ताकि लोगों को इस ऐतराज़ का और ताने का मौक़ा ही न मिलता कि मुंह बोले बेटे की बीवी से निकाह कर लिया तो समझ लेना चाहिए कि) **अल्लाह तआ़ला हर बात** (की भलाई बुराई) **को अच्छी तरह जानने वाला है**(40)

नोटः- इस आयत से साबित हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़री नबी व आख़री पैग़म्बर हैं आप के बाद कोई नबी पैग़म्बर आने वाला नहीं जो आदमी नबी होने का दावा करे वो झूटा और काफ़िर है। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आख़री ज़माने में आना पैग़म्बर की हैसियत से न होगा बल्कि वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के ताबे होकर काम करेंगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ﴿۴۱﴾ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿۴۲﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَ مَلٰٓئِكَتُهٗ
لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۖۚ وَ اَعَدَّ لَهُمْ
اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ﴿۴۵﴾ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا
مُّنِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿۴۷﴾ وَ لَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ دَعْ اَذٰىهُمْ وَ
تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۴۸﴾

आयत नं० 41 से 48

ऐ ईमान वालो तुम (अल्लाह के अहसानों को याद करके उस का यह शुक्र अदा करो कि) **अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो** (इसमें सब इबादतें आगईं)(41) **और** (इस ज़िक्र व इबादत की पाबन्दी रक्खो) **सुबह शाम** (यानी हर घड़ी) **उसकी तस्बीह करते रहो** (यानी दिल से भी ज़बान से भी और बदन से भी)(42) **वो ऐसा** (महरबान) **है कि वो** (ख़ुद भी) **और** (उसके हुक्म से) **उस के फ़रिशते** (भी) **तुम पर रहमत भेजते रहते हैं** (उस का रहमत भेजना तो रहमत करना है और फ़रिशतों का रहमत भेजना रहमत की दुआ करना है और यह रहमत भेजना इसलिए है) **ताकि अल्लाह तआ़ला** (उस रहमत की बरकत से) **तुम को** (जहालत और गुमराही के) **अन्धेरों से** (इल्म और हिदायत की) **रौशनी की तरफ़ ले आए, और** (इससे साबित हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला मोमिनों पर बहुत महरबान है**(43) (और आख़रत में भी उन पर रहमत होगी कि) **वो जिस दिन अल्लाह से मिलेंगे तो उन को जो सलाम होगा वो यह होगा कि** (अल्लाह तआला ख़ुद उन से कहेगा) **अस्सलामु अलैकुम** (जो मुसलमानों के लिए बड़ी इज़्ज़त की बात होगी) **और अल्लाह तआ़ला ने उन** (मोमिनों) **के लिए** (जन्नत में) **इज़्ज़त का इनआम तैयार कर रक्खा** (है बस उन के जाने की देर) **है**(44) **ऐ नबी** (आप कुछ सरफिरों के ऐतराज़ से दुखी न हों क्योंकि) **बेशक हम ने आप**

को इस शान का रसूल बनाकर भेजा है कि आप (क़ियामत के दिन सरकारी) **गवाह होंगे** (कि आप के बयान पर उम्मत के लोगों का फ़ैसला होगा) **और** (दुनिया में) **आप** (मोमिनों को) **ख़ुशख़बरी देने वाले हैं और** (काफ़िरों के) **डराने वाले हैं(45) और** (सब को) **अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं और आप** (हिदायत का नमूना होने में) **एक रौशन चराग़** (की तरह) **हैं(46) और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए कि उन पर अल्लाह की तरफ़ से बड़ी महरबानी होने वाली है(47) और** (इसी तरह काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को डराते रहिए और) **काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानिये** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तो इसकी उम्मीद नहीं कि काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के कहने में आकर तबलीग़ व दावत का काम छोड़ दें लेकिन यह कि लोगों के ऐतराज़ से ज़ैनब के निकाह में कोई सुस्ती न करें) **और उन** (काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों) **की तरफ़ से जो** (कोई) **तकलीफ़ पहुंचे** (जैसा कि इस निकाह के बारे में पहुंची) **उसकी परवाह न कीजिए और अल्लाह पर भरोसा कीजिए, और बस अल्लाह ही काम बनाने वाला है(48)।**

नोटः- ऊपर आयत से साबित हुआ कि मुसलमानों का सलाम आपस में एक दूसरे को अस्सलामु अलैकुम होना चाहिए, चाहे बड़े की तरफ़ से छोटे के लिए हो या छोटे की तरफ़ से बड़े के लिए हो।

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ
تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾

आयत नं० 49

ऐ ईमान वालो (तुम्हरे निकाह के हुक्मों में से एक हुक्म तो यह है कि) **जब तुम मुसलमान औरतों से निकाह करो** (और) **फिर उनको छूने** (यानी विदाई होने) **से पहले ही** (किसी वजह से) **तलाक़ दे दो तो तुम्हारी उन पर कोई इद्दत** (वाजिब) **नहीं जिसको तुम गिनने लगो** (ताकि उनको उस इद्दत में दूसरे निकाह से रोक सको जैसा कि इद्दत वाजिब होने की सूरत में शरीअत से रोकना जाइज़ बल्कि वाजिब है और जब इस सूरत में इद्दत नहीं) **तो उनको कुछ** (माल) **सामान देदो और भलाई के साथ उनको विदा करदो(49)।**

नोटः- छूने से मुराद निकाह के बाद विदाई होकर तन्हाई में एक दूसरे का मिलाप हो जाना है। और भलाई से विदा करने का मतलब यह है कि उनको ज़बान से कोई सख़्त बात न कहे और जितना महर उनका बैठता है वो अदा कर दे। और विदाई से पहले तलाक़ दे देने की सूरत में तय महर का आधा देना होता है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ
عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۡ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ
اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۚ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ
وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٥٠ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ
تُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا
يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝٥١ لَا يَحِلُّ لَكَ
النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝٥٢

आयत नं० 50 से 52

ऐ नबी (कुछ हुक्म ख़ास आप के लिए हैं उनमें से कुछ ये हैं, पहला हुक्म) **हम ने आप के लिए आप की ये बीवियां** (जो कि इस वक़्त आप की ख़िदमत में हाज़िर हैं और) **जिनको आप उनके महर दे चुके हैं** (चार से ज़्यादा होने के बावजूद) **हलाल की हैं और** (दूसरा हुक्म यह कि) **वो औरतें भी** (ख़ास तौर पर हलाल की हैं) **जो तुम्हारी बान्दियां हैं जो अल्लाह तआ़ला ने आप को ग़नीमत में दिलवादी हैं** (और ख़ास तौर पर हलाल से मुराद यह है कि जो बान्दी आप के लिए हलाल की गई है आप के बाद वो किसी के लिए हलाल न होगी) **और** (तीसरा हुक्म यह कि) **आप के चचा की बेटियां और आप की फूफियों की बेटियां** (मुराद इससे बाप के ख़ानदान की बेटियां हैं) **और आप के मामू की बेटियां और आप की ख़ालाओं की बेटियां** (मुराद इससे मां के ख़ानदान की बेटियां हैं, यानी उन सब को) **भी** (अल्लाह तआ़ला ने आप के लिए हलाल किया है, मगर इन ख़ानदान की औरतों में सिर्फ़ वो ही) **जिन्होंने आप के साथ हिजरत की** (हो साथ से मुराद यह

कि हिजरत के हुक्म पर अमल किया) **हो, और** (चौथा हुक्म यह कि) **उस मुसलमान औरत को भी** (आप के लिए हलाल किया है) **जो बिना बदल** (यानी बिना महर) **अपने को पैग़म्बर को पेश कर दे** (यानी निकाह में आना चाहे) **शर्त यह कि पैग़म्बर उस को निकाह में लाना चाहें** (मुसलमान की क़ैद से मुराद यह है कि काफ़िर औरत से जाइज़ नहीं जैसा कि आम मुसलमान किताब वालों की औरत से निकाह कर सकते थे और यह पांचवा हुक्म है) **ये सब हुक्म ख़ास आप के लिए हैं दूसरे मुसलमानों के लिए नहीं** (हैं कि उनके लिए दूसरे हुक्म) **हैं,** (और) **हम को वो हुक्म मालूम हैं** (और आयतों व हदीसों से औरों को भी मालूम करा दिये हैं) **जो हम ने उन** (आम मुसलमानों) **पर उनकी बीवियों और बान्दियों के बारे में तय किये हैं** (और आप को उनसे अलग किया है) **ताकि आप पर किसी क़िस्म की तंगी न रहे, और अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाला बड़ा महरबान है(50)** (और छटा हुक्म यह है कि) **इन** (बीवियों) **में से आप जिसको चाहें** (और जब तक चाहें) **अपने से दूर रक्खें** (यानी उसको बारी न दें) **और जिसको चाहें** (और जब तक चाहें) **अपने पास रक्खें** (यानी उस को बारी दें)**, और जिन को दूर कर रक्खा था उनमें से फिर किसी को बुला लें तब भी आप पर कोई गुनाह** (नहीं मतलब यह कि बीवियों के साथ रात की बारी में बराबरी करना आप पर वाजिब) **नहीं, इसमें** (एक छुपी भलाई यह है कि इसमें) **उम्मीद है कि उन** (बीवियों) **की आंखें ठन्डी रहेंगी** (यानी ख़ुश रहेंगी) **और उन्हें दुख नहीं होगा और जो कुछ भी आप उनको दे देंगे उस पर सब की सब राज़ी रहेंगी** (क्योंकि दुख तब होता है जब अपने हक़ में कमी समझे और जब मालूम हो जाए कि जो कुछ मिला है वो अहसान है हमारा हक़ नहीं है तो किसी को कोई शिकायत न रहेगी)**, और अल्लाह उन सब बातों को जानता है जो तुम्हारे दिलों में हैं** (इसलिए यह मत सोचना कि ये हुक्म सब के लिए क्यों नहीं क्योंकि यह अल्लाह तआ़ला पर ऐतराज़ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हसद है जिस पर सज़ा होनी चाहिए)**, और अल्लाह तआ़ला** (ये ही क्या) **सब कुछ जानने वाला** (और) **बड़ी सहार वाला** (है इसलिए फ़ौरन सज़ा नहीं देता कभी ढील दे देता) **है(51) इनके सिवा** (जो ऊपर बयान हुईं) **दूसरी औरतें आप के लिए हलाल नहीं हैं** (यानी रिशतेदारों में से हिजरत न करने वाली और दूसरी औरतों में जो मोमिन न हों हलाल नहीं) **और** (आगे सातवां नया हुक्म यह है कि) **न यह जाइज़ है कि आप इन** (मौजूदा) **बीवियों की जगह दूसरी नई बीवियां कर लें** (इस तरह से कि इनमें से किसी को तलाक़ देदें और उसकी जगह दूसरी करलें और बिना इनको तलाक़ दिये हुए अगर किसी से निकाह करलें तो इसकी मनाही नहीं इसी तरह अगर बदलने के इरादे के बिना किसी को तलाक़ देदें तो

इसकी भी मनाही साबित नहीं बस बदलना मना है) **चाहे आप को उन** (दूसरी औरतों) **की अच्छाई पसन्द आए, मगर जो आप की बान्दी हो** (कि वो किताब वाली होने पर भी हलाल है और उसको बदलना भी जाइज़ है)**, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़** (की असलीयत और निशानियों और छुपी भलाइयों) **की पूरी देखभाल करने वाला** (है इसलिए सब हुक्मों में भलाइयां छुपी हैं चाहे वो आम लोगों को पता न हों इसलिए किसी को ऐतराज़ का हक़ नहीं) **है(52)।**

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत सी औरतों से निकाह की इजाज़त होने में छुपी भलाइयों में एक भलाई यह है कि उन बीवियों के वास्ते से दीन की ख़ास बातें उम्मत को मालूम हुईं जिसका अन्दाज़ा इस बात से हो सकता है कि सिर्फ़ हज़रत आयशा रज़ि० से '2210' हदीसें और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से '368' हदीसें रिवायत की गईं हैं जो हदीस की किताबों में लिखी हैं और 200 से ज़्यादा हज़राते सहाबा हज़रत आइशा के शागिर्द हैं जिन्होंने हदीसें और फ़तवे उनसे सीखे हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَ لٰكِنْ اِذَا
دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ لَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ
مِنْكُمْ ۫ وَ اللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ
لِقُلُوْبِكُمْ وَ قُلُوْبِهِنَّ ؕ وَ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ
ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿۵۳﴾ اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۵۴﴾ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ
فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآئِهِنَّ وَ لَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَ لَا نِسَآئِهِنَّ وَ لَا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَ اتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿۵۵﴾

आयत नं० 53 से 55

ऐ ईमान वालो नबी के घरों में (बेबुलाए) **मत जाया करो मगर जिस वक़्त तुम को खाने के लिए** (आने की) **इजाज़त दी जाए** (तो जाने में हरज नहीं, मगर तब भी जाना) **इस तरह** (हो) **कि उस** (खाने) **की तैयारी के इन्तिज़ार में न रहो** (यानी बेदावत तो जाओ नहीं और दावत हो तब

भी बहुत पहले से मत जा बैठो) **लेकिन जब तुम को बुलाया जाए** (कि अब चलो खाना तैयार है) **तब जाया करो फिर जब खाना खा चुको तो उठ कर चले जाया करो और बातों में जी लगा कर मत बैठा करो,** (क्योंकि) **इस बात से नबी को तकलीफ़ होती है सो वो तुम से** (कहते हुए) **शर्माते हैं** (कि उठ कर चले जाओ)**, और अल्लाह तआ़ला साफ़ बात कहने से** (किसी से) **नहीं शर्माते** (इसलिए साफ़ कह दिया गया)**, और** (अब से ये हुक्म किया जाता है कि हज़रत की बीवियां तुम से पर्दा करेंगी तो अब से) **जब तुम उन से कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर** (खड़े होकर वहां) **से मांगा करो** (यानी बेज़रूरत तो पर्दे के पास जाना और बात करना भी न चाहिए लेकिन ज़रूरत में बात करने में हरज नहीं मगर सामना न होना चाहिए)**, यह बात** (सदा के लिए) **तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के पाक रहने का अच्छा सामान है** (यानी जिस तरह अब तक पाक हैं इससे आगे को पाक रहेंगे)**, और** (सिर्फ़ यह घर में जम कर बैठ जाना ही नहीं बल्कि) **तुम को** (किसी बात में भी) **जाइज़ नहीं कि रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को तकलीफ़ पहुंचाओ और न यह जाइज़ है कि तुम उनके बाद उनकी बीवियों से कभी भी निकाह करो, यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी भारी** (गुनाह की) **बात** (है और जिस तरह यह निकाह नाजाइज़ है ऐसे ही उस का ज़बान से कहना या दिल में इरादा करना सब गुनाह) **है(53)** (सो) **अगर तुम** (इसके बारे में) **किसी चीज़ को** (ज़बान से) **खोलोगे या उस** (के इरादे) **को** (दिल में) **छुपा कर रक्खोगे तो अल्लाह तआ़ला** (को दोनो की ख़बर होगी क्योंकि वो) **हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं** (बस तुम को इस पर सज़ा देंगे)**(54) पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के** (सामने होने के) **बारे में कोई गुनाह नहीं और न अपने बेटों के** (यानी जिसके बेटा हो) **और न अपने भाइयों के और न अपने भतीजों के और न अपने भान्जों के और न अपनी** (दीन शरीक) **औरतों के और न अपनी बान्दियों के** (यानी उनके सामने आना जाइज़ है) **और** (ऐ पैग़म्बर की बीवियों इन हुक्मों की पाबन्दी में) **अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को देख रहा है** (यानी उससे कोई चीज़ छुपी नहीं जो उसकी बात न मानेगा उस को सज़ा से डरना चाहिए)**(55)**।

नोटः- ऊपर आयतों में महमानों के लिए और औरतों के पर्दे के बारे में जो हुक्म बयान हुए हैं वो सारी उम्मत के लिए अमल करने और दुनिया व आख़िरत का नफ़ा उठाने के लिए हैं।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِىِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

आयत नं० 56

बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिशते रहमत भेजते हैं इन पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर रहमत भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो** (ताकि आप की मुहब्बत व अज़्मत का हक़ अदा हो जाए)(**56**)।

नोटः- अल्लाह तआ़ला का रहमत भेजना रहमत उतारना है और फ़रिशतों की तरफ़ से रहमत नबी के लिए रहमत की दुआ करना है और आम मुसलमानों की तरफ़ से रहमत भेजना दुआ करना और तारीफ़ करना है।

सहाबा के सलात व सलाम का तरीक़ा पूछने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तरीक़ा बताया वो वोही है जो नमाज़ में अत्तहिय्यात और दुरूद शरीफ़ ''अल्लाहुम्मा सल्लि...... व अल्लाहुम्मा बारिक......'' पढ़ते हैं।

मसअलाः-(1) नमाज़ में तो सलात व सलाम का वोही तरीक़ा क़ियामत तक रहेगा जो हदीस में बताया गया है और रोज़ाए अक़दस पर सलाम अर्ज़ किया जाए तो अस्सलामु अलैक्5 कहना सुन्नत है और इसके अलावा ''सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम'' कहा जाए जैसा कि मुहद्दिसीन की किताबों में लिखा है।

(2) जब कोई हुज़ूर का ज़िक्र करे या सुने तो उस पर दुरूद शरीफ़ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहना) वाजिब हो जाता है। और इस बारे में हदीस में भी आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ''ज़लील हो वो आदमी जिसके सामने मेरा ज़िक्र आए और मुझ पर दुरूद न भेजे''। (तिरमिज़ी)

एक और हदीस में है कि ''बख़ील (कन्जूस) है वो आदमी जिसके सामने मेरा ज़िक्र आए और वो मुझ पर दुरूद न भेजे''। (तिरमिज़ी)

(3) एक मजलिस में आपका मुबारक ज़िक्र बार-बार आए तो सिर्फ़ एक बार दुरूद पढ़ने से वाजिब अदा हो जाता है लेकिन मुस्तहब यह है कि जितनी बार ज़िक्र करे या सुने तो हर बार दुरूद पढ़े।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ۝٥٧ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝٥٨

आयत नं० 57 से 58

बेशक जो लोग अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को** (जान बूझ कर) **तकलीफ़ देते हैं अल्लाह उन पर दुनिया व आख़िरत में लानत करता है और उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब तैयार कर रक्खा है**(57) **और** (इसी तरह) **जो लोग ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बिना इसके कि उन्होंने कुछ** (ऐसा काम) **किया हो** (जिससे वो सज़ा के हक़दार हो जाएं) **तकलीफ़ पहुंचाते हैं तो वो लोग झूट और खुले गुनाह का** (अपने ऊपर) **बोझ लेते हैं** (यानी अगर तकलीफ़ ज़बान से पहुंचाई गई तो झूटा इल्ज़ाम है और अगर हाथ से हो तो गुनाह है ही)(**58**)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ''मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो अल्लाह से डरो उनको मेरे बाद अपने ऐतराज़ों का निशाना न बनाओ क्योंकि उनसे जिसने मुहब्बत की मेरी मुहब्बत की वजह से की और जिसने दुशमनी रक्खी मेरी दुशमनी की वजह से रक्खी और जिसने उन को तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह को तकलीफ़ दी और जिसने अल्लाह को तकलीफ़ दी तो अल्लाह तआ़ला उसकी पकड़ करेगा''। (तिरमिज़ी)

और एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ''मुसलमान तो सिर्फ़ वो आदमी है जिसके हाथ ज़बान से सब सलामत रहें किसी को तकलीफ़ न पहुंचे और मोमिन तो सिर्फ़ वो ही है जिससे लोग अपने जान और माल के बारे में अमन में हों''। (मज़हरी)

मसअलाः-जो आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी तरह की तकलीफ़ पहुंचाए आप की ज़ात या सिफ़ात में कोई ऐब निकाले चाहे साफ़ कहे या इशारे में कहे वो काफ़िर हो गया और इस आयत की रू से उस पर अल्लाह की लानत दुनिया में भी होगी और आख़िरत में भी । (तफ़सीर मज़हरी)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنٰتِكَ وَ نِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ
فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵۹﴾ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْمُرْجِفُوْنَ فِي
الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ۖۚ ﴿۶۰﴾ مَّلْعُوْنِيْنَ ۛۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَ قُتِّلُوْا
تَقْتِيْلًا ﴿۶۱﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۶۲﴾

आयत नं० 59 से 62

ऐ पैग़म्बर अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और दूसरे मुसलमानों की औरतों से भी कह दीजिए कि वो अपनी चादरें (सर से) **अपने** (चेहरे के) **ऊपर झुका लिया करें, इससे जल्दी पहचान हो जाया करेगी** (कि किसी शरीफ़ ख़ानदान की हैं) **तो उनको सताया न जाएगा** (और कोई छेड़ छाड़ न करेगा यानी अगर किसी ज़रूरत से बाहर निकलना पड़े तो चादर से सर और चेहरा भी छुपा लिया जाए जैसे आजकल बुर्क़े का रिवाज है)**, और** (अगर इस पर्दे में बिना इरादा कुछ चूक हो जाए तो) **अल्लाह तआ़ला** (उसको मुआफ़ कर देगा क्योंकि वो) **बख़्शने वाला महरबान है (59)** (और आगे उन लोगों को धमकी दी गई है जो रास्तों में औरतों को छेड़ते थे और झूटी अफ़वाहें फैलाकर उनको परीशान करना चाहते थे फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ों में से) **वो लोग जिनके दिलों में रोग है** (जिसकी वजह से औरतों को छेड़ते और परीशान करते हैं) **और** (उन्ही मुनाफ़िक़ों में से) **वो लोग जो मदीने में** (झूटी और परीशान करने वाली) **अफ़वाहें उड़ाया करते हैं** (ये लोग) **अगर** (अपनी इन हरकतों से) **बाज़ न आए तो ज़रूर** (एक न एक दिन) **हम आप को उन पर तैनात कर देंगे** (यानी उन के मदीने से निकालने का हुक्म कर देंगे) **फिर** (उस हुक्म के बाद) **ये लोग आप के पास मदीने में बहुत ही कम रहने पाएंगे(60) वो भी** (हर तरफ़ से) **फिटकारे हुए** (यानी मदीने से निकलने के लिए जो मोहलत दी जाएगी उन दिनों में भी ज़लील व रूसवा होंगे फिर निकाल दिये जाएंगे और निकालने के बाद भी कहीं अमन न होगा बल्कि) **जहां मिलेंगे पकड़ लिये जाएंगे और मारे जाएंगे(61)** (और फ़सादियों को ऐसी सज़ा देना कुछ इन्हीं के लिए ख़ास नहीं बल्कि) **अल्लाह तआ़ला ने उन** (फ़सादी) **लोगों में भी अपना ये ही दस्तूर** (जारी) **रक्खा जो** (इन से) **पहले हो चुके हैं** (कि उन को आसमानी सज़ाएं दीं या पैग़म्बरों के हाथ से जिहाद में दिलवाईं, बस अगर पहले ऐसा न हो चुका होता तो ऐसी सज़ा में कुछ अचम्भा हो सकता था) **और आप अल्लाह के दस्तूर में** (किसी आदमी की तरफ़ से) **बदलाव न पाएंगे** (कि अल्लाह तो कोई हुक्म जारी करना

चाहे और कोई उस को रोक सके)(62)।

नोटः- ऊपर आयतों से साबित हुआ कि.......

(1) औरतों को जब किसी ज़रूरत से बाहर निकलना पड़े तो पर्दे का ध्यान रक्खें।

(2) मुसलमानों में ऐसी अफ़वाह फैलाना हराम है जिन से उनको परीशानी और नुक़सान पहुंचे।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ
لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ
وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا
فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَاۤ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾

आयत नं० 63 से 68

ये (इनकार करने वाले) **लोग आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं** (कि कब होगी)**, आप** (उन के जवाब में) **कह दीजिए कि उस** (के वक़्त) **की ख़बर बस अल्लाह ही के पास है, और आप को क्या पता** (कि कब होगी) **और अजब नहीं कि क़ियामत अभी आजाए** (इसलिए चाहिए यह था कि उसके अन्जाम से डरते और उसकी तैयारी में लगते और इनकार करने वाले सवालों से और हंसी उड़ाने से बचते)(63) **बेशक अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को रहमत से दूर कर रक्खा है और उनके लिए दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है**(64) **जिसमें वो सदा-सदा रहेंगे** (और) **न कोई यार पाएंगे और न कोई मददगार**(65) **जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में अलट पलट किये जाएंगे** (यानी चेहरों के बल घसीटे जाएंगे कभी चेहरे की इस करवट पर कभी दूसरी करवट पर और उस वक़्त बहुत पछताते हुए) **यह कहेंगे ऐ काश! हमने** (दुनिया में) **अल्लाह का कहा माना होता और हमने रसूल का कहा माना** (होता तो आज इस मुसीबत का सामना न) **होता**(66) **और** (अपने गुमराह करने वालों पर गुस्सा आएगा तो) **यह कहेंगे कि या रब हमारे हमने अपने सरदारों का** (यानी हुकूमत वालों का) **और अपने बड़ों का कहना माना था सो उन्होंने हम को** (सीधे) **रास्ते से गुमराह किया था**(67) **या रब हमारे उन को दोगुनी सज़ा दीजिए और उन पर बड़ी लानत कीजिए**(68)।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿۶۹﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿۷۰﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۱﴾

आयत नं० 69 से 71

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों की तरह मत होना जिन्होंने (झूटी बात बनाकर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को सताया था सो उनको अल्लाह तआ़ला ने बरी साबित कर दिया** (यानी उन को तो कुछ नुक़सान न पहुंचा इल्ज़ाम लगाने वाले ही झूटे और सज़ा के हक़दार ठहरे), **और वो** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) **अल्लाह के नज़दीक बड़े रूतबे वाले** (पैग़म्बर) **थे** (मतलब यह है कि तुम रसूल की मुख़ालफ़त करके उनको तकलीफ़ न देना क्योंकि उनकी मुख़ालफ़त अल्लाह की मुख़ालफ़त है वर्ना इसके नतीजे में तुम ख़ुद अपना नुक़सान करोगे)(69) **ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो** (यानी हर बात में उसका कहा मानो) **और** (ख़ास कर बोलने में इस का बहुत ध्यान रक्खो कि जब बात करो) **सीधी सच्ची बात कहो** (जिसमें इन्साफ़ की हद से आगे न बढ़ो)(70) **अल्लाह तआ़ला** (इस के बदले में) **तुम्हारे नेक कामों को कुबूल करेगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा** (कुछ नेक कामों की बरकत से कुछ तौबा की बरकत से), **और** (ये फल ताबेदारी के हैं और ताबेदारी ऐसी चीज़ है कि) **जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा तो वो बड़ी कामयाबी को पहुंचेगा**(71)।

नोटः- ऊपर आयत से यह भी मालूम हुआ कि ज़बान और कलाम को ठीक रखना दीन व दुनिया दोनों के काम ठीक बनाने वाला अमल है।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَ اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَ حَمَلَهَا
الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿۷۲﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ وَ الْمُشْرِكٰتِ وَ يَتُوْبَ
اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۷۳﴾

आयत नं० 72 से 73

हम ने यह अमानत (यानी शरीअत के हुक्म जो अमानत की तरह हैं) **आसमानों और**

ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी (यानी उनमें कुछ समझ पैदा करके और उन हुक्मों के मानने पर सवाब और न मानने पर अज़ाब बता कर उस अमानत की ज़िम्मेदारी लेना या न लेना उन की मर्ज़ी पर छोड़ दिया गया था) **तो उन्होंने** (डर और अज़ाब की वजह से सवाब की उम्मीद से भी हाथ उठा दिया और) **उस की ज़िम्मेदारी से इनकार कर दिया और उस** (की ज़िम्मेदारी) **से डर गये** (कि ख़ुदा जाने क्या अन्जाम हो, और अगर वो अपने ज़िम्मे रख लेते तो इन्सान की तरह उनको भी अक़्ल और समझ दी जाती) **और** (जब इन्सान को पैदा करके उससे ये ही बात पूछ गई तो) **इन्सान ने** (इस वजह से कि अल्लाह के इल्म में उस का ख़लीफ़ा होना तय था) **उस को अपने ज़िम्मे ले लिया,** (फिर उनमें बहुत सों की हालत यह है कि) **वो** (अपने आमाल व कारनामों में) **ज़ालिम है** (और इल्म में) **जाहिल** (है यानी दोनों बातों में आमाल में भी और अक़ीदों में भी हुक्म की मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी करता) **है**(72) (और इस ज़िम्मेदारी का) **अन्जाम यह हुआ कि अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ मर्दों व मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों व मुशरिक औरतों को** (कि ये हुक्मों के बर्बाद करने वाले हैं) **सज़ा देगा और मोमिन मर्दों व मोमिन औरतों को मुआफ़ कर देगा** (और उन पर रहमत की नज़र करेगा)**, और** (अगर मुख़ालफ़त के बाद भी कोई बाज़ आजाए तो उस को भी मोमिनों में शामिल कर लिया जाएगा क्योंकि) **अल्लाह तआला बहुत बख़्शने वाला बड़ा महरबान है**(73)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चार चीज़ें ऐसी हैं कि जब वो तुम्हें हासिल हो जाएं तो दुनिया की और कोई चीज़ तुम्हें हासिल न हो तो कोई अफ़सोस की बात नहीं। (वो चार चीज़ें ये हैं)- अमानत की हिफ़ाज़त, बात की सच्चाई, अच्छे अख़लाक़ और हलाल रोज़ी। (इब्ने कसीर)

34-सूरत-सबा

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '54' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ ؕ وَ هُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ۝۱ یَعْلَمُ مَا
یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَ مَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَ مَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا یَعْرُجُ فِیْهَا ؕ وَ هُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ ۝۲

आयत नं० 01 से 02

सारी तारीफ़ (हम्दो सना) **उसी अल्लाह की है जो मालिक है** (सब का) **जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और आख़रत में भी तारीफ़ उसी की है** (कि जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल होने के बाद उसी की हम्दो सना करेंगे)**, और वो हिकमत वाला है** (कि आसमान व ज़मीन की सारी मख़लूक़ को बहुत सी भलाइयों और हिकमतों के साथ बनाया और वो) **ख़बरदार** (भी है कि उन हिकमतों को पैदा करने से पहले से जानता) **है(01)** (और वो ऐसा ख़बरदार है कि) **वो सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर जाती है** (जैसे बारिश का पानी) **और जो चीज़ उसमें से निकलती है** (जैसे पेड़ पौधे और खेती) **और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ उसमें चढ़ती है** (जैसे फ़रिशते जो आसमान से उतरते और चढ़ते रहते हैं और जैसे शरीअत के हुक्म जो आसमान से उतारे जाते हैं और नेक काम जो आसमान में ले जाए जाते हैं)**, और** (इसलिए सब को चाहिए कि उसका शुक्र अदा करें और जो न करें वो सज़ा पाएं लेकिन) **वो** (अल्लाह) **बड़ा रहम करने वाला** (और) **बहुत बख़्शने वाला** (भी है और अपनी रहमत से छोटे गुनाहों को नेक कामों से और बड़े गुनाहों को तौबा से और कभी दोनो क़िस्म के गुनाहों को सिर्फ़ अपनी महरबानी से मुआफ़ कर देता है और जो गुनाह कुफ़्र व शिर्क की हद तक पहुंच जाए उस को ईमान लाने से मुआफ़ कर देता) **है(02)**।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَ رَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِي الْاَرْضِ وَ لَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَ لَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۟ۙ ٣ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ٤ وَ الَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ
رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ٥ وَ يَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَ يَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
الْحَمِيْدِ ٦ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ۚ ٧ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَ الضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ٨
اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ
عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۠ ٩

आयत नं० 03 से 09

और ये काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़ियामत न आएगी, आप कह दीजिए कि क्यों नहीं (आएगी) **क़सम मेरे रब छुपी बातें जानने वाले की कि वो ज़रूर तुम पर आएगी** (उस का इल्म ऐसा है कि) **उस** (के इल्म) **से कोई तिल भर छुपा नहीं न आसमानों में न ज़मीन में** (बल्कि सब उसके इल्म में हाज़िर हैं) **और न कोई चीज़ उससे छोटी है और न कोई चीज़** (उससे) **बड़ी है मगर ये सब** (चीज़ें तक़दीर की) **खुली किताब में** (लिखी) **हैं (03)** (और क़ियामत इसलिए आएगी) **ताकि उन लोगों को** (अच्छा) **बदला दे जो ईमान लाए थे और उन्होंने नेक काम किये थे,** (सो) **ऐसे लोगों के लिए बख़्शिश और** (जन्नत में) **इज़्ज़त की रोज़ी है(04) और जिन लोगों ने हमारी आयतों के बारे में** (उनके झुटलाने की) **कोशिश की थी** (नबी को) **हराने के लिए** (चाहे इस कोशिश में नाकाम ही रहे) **ऐसे लोगों के लिए बहुत सख़्त दर्दनाक अज़ाब होगा(05) और** (क़ुरआन के हक़ होने का सबूत यह है कि) **जिन लोगों को** (आसमानी किताबों का) **इल्म दिया गया है वो इस क़ुरआन को जो कि आप के रब की तरफ़ से आप के पास भेजा गया है ऐसा समझते हैं वो हक़ है और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले और) **ख़ूबियों वाले अल्लाह** (की रज़ामन्दी) **का रास्ता बताता है(06) और** (आगे फिर क़ियामत का ज़िक्र है कि) **ये काफ़िर** (आपस में) **कहते हैं कि क्या हम तुम को एक ऐसा आदमी बताएं जो तुम को यह** (अजीब) **ख़बर देता है कि जब तुम** (मर कर) **बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाओगे तो** (उसके बाद क़ियामत को)

तुम ज़रूर एक नये जन्म में आओगे(07) पता नहीं इस आदमी ने अल्लाह पर (जान बूझ कर) **झूट बान्धा है या उसको किसी तरह का जुनून** (है कि बेइरादा झूट बोल रहा) **है,** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हमारे नबी न झूट घड़ने वाले हैं और न उनको जुनून है) **बल्कि जो लोग आख़रत पर यक़ीन नहीं रखते** (वो ही) **अज़ाब और परले दर्जे की गुमराही में** (पड़े हैं और इस गुमराही का असर यह है कि सच्चे भी झूटे और मजनू दिखाई देते) **हैं(08)** (ये लोग दोबारा पैदा करने को हमारी क़ुदरत से दूर समझ रहे हैं) **तो क्या इन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा जो उनके आगे** (भी) **और उनके पीछे** (भी) **मौजूद** (हैं कि जिधर देखो वो ही दिखाई दे रहे हैं बस इन बड़ी चीज़ों को पैदा करने वाला क्या छोटी चीज़ों को दोबारा पैदा नहीं कर सकता और साफ़ दलील के बावजूद भी हटधर्मी से इनकार कर रहे हैं और इनको क़ियामत में क़ियामत के इनकार पर भी सज़ा होगी और हम हर सज़ा पर क़ुदरत रखते) **हैं, अगर हम चाहें तो उनको ज़मीन में धंसा दें या** (अगर चाहें तो) **उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें** (लेकिन इसमें भेद हैं जो मोहलत दे रक्खी है)**, इस** (बताई दलील) **में** (अल्लाह की क़ुदरत की) **पूरी दलील है** (मगर) **उस बन्दे के लिए जो** (अल्लाह की तरफ़) **लौ लगाने वाला भी** (हो और हक़ की चाहत भी रखता) **हो** (यानी दलील तो काफ़ी है मगर उनकी तरफ़ से चाहत नहीं इसलिए महरूम हैं)**(09)**।

नोटः- सारे जहानों का कोई ज़र्रा किसी घड़ी भी उससे बाहर नहीं बस ऐसा इल्म सिवाए अल्लाह के किसी और को हासिल नहीं हो सकता।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِىْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَ اَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۙ﴿۱۰﴾ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّ قَدِّرْ فِى
السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱﴾ وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَ اَسَلْنَا
لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَ مِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَ مَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ
عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَ تَمَاثِيْلَ وَ جِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَ قُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ
دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَ قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِىَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ
تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِى الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾

आयत नं० 10 से 14

और हम ने दाऊद (अलैहिस्सलाम) **को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी थी,** (जैसा कि हमने

पहाड़ों को हुक्म दिया था कि) **ऐ पहाड़ो! दाऊद के साथ बार-बार तस्बीह करो** (यानी जब ये ज़िक्र करें तुम भी इनका साथ दो) **और** (इसी तरह) **परिन्दों को भी हुक्म दिया** (कि इनके साथ तस्बीह करो, और यह तस्बीह ऐसी होगी कि सुनने वाले भी समझलें और यह आप का मोजिज़ा हुआ) **और** (एक नेमत यह दी कि) **हम ने उनके वास्ते लोहे को** (मोम की तरह) **नर्म कर दिया था(10)** (और यह हुक्म दिया) **कि तुम** (इस लोहे की अच्छी) **पूरी ज़रह बनाओ और** (कड़ियों के) **जोड़ने में** (ठीक) **अन्दाज़** (का ध्यान) **रक्खो और** (जैसे हमने तुम को नेमतें दी हैं उनके शुक्र में) **तुम सब** (यानी दाऊद अलैहिस्सलाम और उनके घर वाले) **नेक काम किया करो,** (और इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रक्खो कि) **मैं तुम्हारे सब के कामों को देख रहा हूं(11) और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के लिए हवा को ताबे बना दिया कि उस** (हवा) **का सुबह का चलना महीने भर की दूरी थी और** (इसी तरह) **उस का शाम का चलना महीने भर की दूरी** (थी यानी वो हवा सुलेमान अलैहिस्सलाम को इतनी-इतनी दूर पहुंचाती) **थी, और** (एक नेमत उनको यह दी कि) **हम ने उनके लिए ताम्बे की नहर बहादी** (यानी ताम्बे को उसकी कान में पानी की तरह पतला कर दिया ताकि उससे बिना मशीनों के आसानी से चीज़ें बना सकें फिर वो जम जाता यह भी एक मोजिज़ा है)**, और** (एक नेमत यह थी कि हमने) **जिन्नात** (को उनका ताबे कर दिया था उन) **में कुछ वो थे जो उनके आगे** (तरह-तरह के) **काम करते थे उनके रब के हुक्म से, और** (उनको यह हुक्म दिया था कि) **उनमें जो आदमी हमारे** (इस) **हुक्म से** (कि सुलेमान अलैहिस्सलाम का कहना मानो) **मुंह फेरेगा** (यानी कहना न मानेगा तो) **हम उस को** (आख़रत में) **दोज़ख़ का अज़ाब चखाएंगे** (यानी जिन्नात में जो ईमान लाएगा और कहना मानेगा वो दोज़ख़ के अज़ाब से बचा रहेगा)(12) **वो जिन्नात उनके लिए वो चीज़ें बनाते जो वो** (बनवाना) **चाहते थे बड़ी-बड़ी इमारतें और तस्वीरें और लगन** (यानी टब ऐसे बड़े) **जैसे हौज़ और** (बड़ी-बड़ी) **देगें जो** (हिलाए न हिल सकें) **एक ही जगह जमी रहें,** (और हमने उन को यह हुक्म दिया कि जैसे हमने तुम को नेमतें भी दी हैं) **ऐ दाऊद के ख़ानदान वालो तुम सब** (इन नेमतों के) **शुक्रिये में नेक काम किया करो, और मेरे बन्दों में शुक्र करने वाले कम ही होते हैं** (इसलिए शुक्र अदा करने से तुम सबसे ऊपर हो जाओगे)(13) **फिर जब हमने उन पर** (यानी सुलेमान अलैहिस्सलाम पर) **मौत का हुक्म जारी कर दिया** (यानी इन्तिक़ाल कर गये) **तो** (इस तरह मौत हुई कि जिन्नात को पता नहीं चला वो यह कि सुलेमान अलैहिस्सलाम मौत के क़रीब असा को दोनों हाथों से पकड़ कर उस पर टेक लगा कर तख़्त पर बैठ गये, और इसी हालत में मौत आ गई और इसी तरह साल भर तक बैठे रहे जिन्नात आप को बैठा देख कर ज़िन्दा समझते रहे पास जाकर

देखने की हिम्मत किसी की न थी और ज़िन्दा समझ कर बदस्तूर काम करते रहे और) **किसी चीज़ ने उनके मरने का पता न बताया मगर दीमक** (कीड़े) **ने कि वो सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के असा को खाता था** (यहां तक कि एक हिस्सा उसका खा लिया तो वो असा गिर पड़ा उसके गिरने से सुलेमान अलैहिस्सलाम गिर पड़े) **तो जब वो गिर पड़े** (और कीड़े के लकड़ी खाने का अन्दाज़ा लगाने से पता चला कि उनको तो इन्तिक़ाल पाए हुए एक साल हुआ) **तब जिन्नात को** (अपने ग़ैब की बातें जानने के दावे की) **असलीयत पता चली** (वो यह कि) **अगर वो ग़ैब का इल्म जानते होते तो** (साल भर तक) **इस रूसवाई भरी मुसीबत में न रहते** (यानी इतनी मेहनत न करनी पड़ती)(14)।

नोटः- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम लोहे की ज़रह बनाते थे हालांकि इतने बड़े पैग़म्बर और इतने बड़े बादशाह थे मगर अपने गुज़ारे के लिए दस्तकारी करते थे तो किसी भी पेशे को हक़ीर ज़लील समझना गुनाह है और उन पेशा करने वालों की बिरादरी को गिरा हुआ समझना गुनाह है जैसा कि हिन्दुस्तान में रिवाज है।

मसअलाः- हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शरीअत में जानदारों की तस्वीरें बनाना और इस्तेमाल करना हराम नहीं था। मगर चूंकि पहली उम्मतों में यह बात देखी गई कि वो तस्वीरें आहिस्ता-आहिस्ता बुत परस्ती का सामान बन गईं इस लिए शरीअते इस्लाम में तस्वीरों का बनाना और इस्तेमाल करना हराम किया गया।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِىْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّ شِمَالٍ ۬ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَ اشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ
طَيِّبَةٌ وَّ رَبٌّ غَفُوْرٌ ۝۱۵ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَ بَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَىْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّ
اَثْلٍ وَّ شَیْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ۝۱۶ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَ هَلْ نُجٰزِیْۤ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝۱۷ وَ جَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَ بَيْنَ
الْقُرَى الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّ قَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِىَ وَ اَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ۝۱۸ فَقَالُوْا رَبَّنَا
بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَ مَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ
صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝۱۹

आयत नं० 15 से 19

सबा (क़ौम के लोगों) **के लिए** (ख़ुद) **उनके वतन** (की हालत) **में** (अल्लाह की ताबेदारी के लिए) **निशानियां मौजूद थीं,** (उनमें से एक निशानी उनकी सड़क के) **दाएं और बाएं दोनों तरफ़ बाग़ों का सिलसिला था,** (हमने पैग़म्बरों और नसीहत करने वालों के वास्ते से उन को हुक्म दिया कि) **अपने रब की** (दी हुई) **रोज़ी खाओ और** (खाकर) **उस का शुक्र** (करो यानी ताबेदारी) **करो,** (एक तो रहने को) **अच्छा शहर** (जो दुनिया का नफ़ा है) **और** (अगर ग़लती हो जाए तो गुनाह मुआफ़ करने को) **बख़्शने वाला रब** (है जो आख़रत का नफ़ा है तो ऐसी सूरत में उसकी ताबेदारी ज़रूरी) **है (15) सो** (इस पर भी) **उन्होंने** (इस हुक्म से) **मुंह मोड़ लिया तो हम ने उन पर** (अपना अज़ाब इस तरह भेजा कि) **बन्द** (डेम) **का सैलाब छोड़ दिया** (यानी जो पानी बान्ध (डेम) में रूका रहता था बान्ध टूट कर उस का पानी चढ़ आया जिस से उनके दो तरफ़ बाग़ बर्बाद हो गये) **और हमने उनके उन दो तरफ़ा बाग़ों के बदले और दो बाग़ दे दिये जिन में ये चीज़ें रह गईं कड़वे फल और झाऊ और कुछ** (जंगली) **बेर वाली झाड़ियां(16) उन को यह सज़ा हमने उनकी नाशुक्री की वजह से दी, और हम ऐसी सज़ा बड़े नाशुक्रों** (यानी काफ़िरों) **ही को दिया करते** (हैं वर्ना छोटी-छोटी ख़ताओं को तो हम मुआफ़ ही कर दिया करते) **हैं(17) और** (एक नेमत यह थी कि) **हम ने उनके और उन बस्तियों के बीच में जहां हमने पैदावार की बरकत कर रक्खी है बहुत से गांव आबाद कर रक्खे थे जो** (सड़क पर से) **दिखाई देते थे** (कि मुसाफ़िर को सफ़र में घबराहट न हो और कहीं ठहरना चाहे तो वहां जाने में झिजक भी न हो) **और हमने उन देहातों के बीच में उनके चलने का एक ख़ास अन्दाज़ रक्खा** (था यानी एक गांव से दूसरे गांव तक ऐसी दूरी रक्खी थी कि सफ़र में आराम कर सकें और वक़्त पर खा पी सकें ऐसा कोई न कोइ गांव मिल जाता) **था,** (और कहा था कि) **बिना डर और ख़तरे के उन में** (चाहो) **रातों को और** (चाहो) **दिनों को चलो** (कि न ख़तरा लुटेरों का कि पास-पास गांव थे न परीशानी खाने पीने की कि हर जगह हर सामान मिलता था)**(18) सो** (इन नेमतों की शुक्रगुज़ारी और क़द्र उन्होंने नहीं की जैसा कि) **वो कहने लगे या रब हमारे** (देहात पास-पास होने से सफ़र का मज़ा नहीं आता बस) **हमारे सफ़रों में दूरी कर दे** (यानी बीच के देहात उजाड़ दे कि ठहरने का फ़ासला बढ़ जाए ताकि सफ़र का मज़ा आए) **और** (इस नाशुक्री के सिवा) **उन्होंने** (और भी नाफ़रमानियां करके) **अपनी जानों पर ज़ुल्म किया सो हमने उन को कहानियां बना दिया और बिल्कुल तितर बितर कर दिया** (कि कुछ हलाक हो गये कुछ दूर जाकर रहने लगे और वो बस्तियां वीरान हो गईं) **बेशक इस** (क़िस्से) **में**

हर सब्र करने वाले शुक्र करने वाले (यानी मोमिन) **के लिए सीख की बातें हैं**(19)।

وَ لَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا
لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَ رَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾

आयत नं० 20 से 21

और सचमुच इबलीस ने अपना गुमान उन लोगों के बारे में सही पाया (यानी उस को जो यह गुमान था कि मैं आदम की औलाद में बहुत सों को गुमराह कर दूंगा क्योंकि यह मिट्टी से और मैं आग से पैदा हुआ हूं उसका यह गुमान सही निकला) **कि ये सब उसी के पीछे चल पड़े सिवाए ईमान वाले लोगों के** (कि उनमें पूरे ईमान वाले तो बिल्कुल बचे रहे और कमज़ोर ईमान वाले चाहे गुनाहों में पड़ गये मगर शिर्क व कुफ़्र से वो भी बचे रहे)(20) **और इबलीस का उन पर कुछ ज़ोर न था सिवाए इसके कि** (बहका सके और) **हम** (खुले तौर पर) **यह देखना चाहते थे कि कौन है जो आख़रत पर ईमान लाता है और कौन है जो** (इबलीस के बहकाने से) **आख़रत के बारे में शक में पड़ा** (है यानी मोमिन काफ़िर का इम्तिहान लेना) **है, और आप का रब हर चीज़ की देख रेख कर रहा** (है जिसमें लोगों का ईमान व कुफ़्र भी दाख़िल है इसलिए हर एक को सही बदला व सज़ा मिलनी) **है**(21)।

नोटः- मालूम हुआ कि शैतान को ऐसी ताक़त नहीं दी गई कि वो इन्सान पर ज़बरदस्ती हावी होकर उसको नाफ़रमानी पर मजबूर करदे लेकिन वो सिर्फ़ बहका सकता है और बहकाना भी इसलिए कि आज़माना है कि कौन उसके बहकाए में आता है कौन दीन पर क़ाइम रहता है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِي الْاَرْضِ وَ مَا لَهُمْ فِيْهِمَا
مِنْ شِرْكٍ وَّ مَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ
قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَا ذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَ لَا نُسْـَٔلُ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَ هُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ

بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ۭ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

आयत नं० 22 से 27

आप (इन लोगों से) **कह दीजिए कि जिन** (माबूदों) **को तुम अल्लाह के सिवा** (ख़ुदाई में साझी) **समझ रहे हो उन को** (अपनी ज़रूरतों के लिए) **पुकारो** (तो सही मालूम हो जाएगा कि उनके बस में क्या है, उनकी हालत तो यह है कि) **तिल भर भी** (कोई चीज़) **उनके बस में नहीं न आसमानों** (की चीज़ों) **में और न ज़मीन** (की चीज़ों) **में और न उन का इन दोनों** (के पैदा करने) **में कोई साझा है और न उनमें से कोई अल्लाह का** (किसी काम में) **मददगार है(22) और** (अगर कोई यह सोचता हो कि ये माबूद ख़ुश हो कर अल्लाह से हमारी सिफ़ारिश कर देंगे तो जान लो कि) **अल्लाह के सामने** (किसी की) **सिफ़ारिश किसी के काम नहीं आती** (बल्कि सिफ़ारिश ही नहीं हो सकती) **सिवाए उस के लिए जिसके बारे में वो** (किसी सिफ़ारिश करने वाले को) **इजाज़त देदे,** (और फ़रिशतों का तो यह हाल है कि जब उनको कोई हुक्म दिया जाता है तो अल्लाह के रौब की वजह से घबरा कर मदहोश हो जाते हैं) **यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो एक दूसरे से पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या हुक्म दिया, वो जवाब देते हैं कि** (उस) **हक़ बात का हुक्म दिया और** (उसके सामने फ़रिशतों का ऐसा हाल हो जाने में क्या हैरानी है) **वो ऊंची शान वाला सबसे बड़ा है(23) और आप** (उनसे तौहीद की जानकारी के लिए यह भी) **पूछिए कि तुम को आसमान** (से पानी बरसाकर) **और ज़मीन से** (खेती उगाकर) **कौन रोज़ी देता है,** (चूंकि वो भी जानते हैं इसलिए) **आप** (ही) **कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला** (रोज़ी देता है) **और** (यह भी कहिए कि इस तौहीद के मसअले में) **बेशक हम या तुम ज़रूर सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में** (हैं यानी यह तो हो नहीं सकता कि तौहीद और शिर्क दोनो सही और हक़ हों और दोनो तरह के अक़ीदे रखने वाले हक़ पर हों बल्कि ज़रूरी है कि उन दोनों अक़ीदों में से एक सही दूसरा ग़लत हो, सही अक़ीदे के रखने वाले हिदायत पर ग़लत अक़ीदा रखने वाले गुमराही पर होंगे अब तुम सोचलो कि उनमें से कौन सा अक़ीदा सही है और कौन लोग हक़ व हिदायत पर हैं और कौन गुमराही पर) **हैं(24) आप** (उनसे यह भी) **कह दीजिए** (कि हमने खोल कर सही व ग़लत को बयान कर दिया है अब तुम और हम हर एक अपने कामों का ज़िम्मेदार है) **तुम से हमारे जुर्मों की पूछताछ न होगी और हम से तुम्हारे कामों की पूछ न होगी(25) और** (आप उन से यह भी) **कह दीजिए कि** (एक वक़्त ज़रूर आने वाला है जिसमें) **हमारा रब सब को** (एक जगह) **जमा**

करेगा फिर हमारे बीच ठीक-ठीक (खुला) **फ़ैसला कर देगा, और वो बड़ा फ़ैसला करने वाला** (और सब का हाल) **जानने वाला है**(26) **आप** (यह भी) **कहिए कि** (तुम ने अल्लाह तआ़ला की ऊंची शान और बड़ी क़ुदरत की दलीलें सुन लीं और अपने बुतों की बेबसी भी देख ली) **मुझ को ज़रा वो तो दिखाओ जिनको तुमने शरीक बना कर** (इबादत का हक़्दार समझ कर) **अल्लाह के साथ मिला रक्खा है हरगिज़** (उस का कोई साझी) **नहीं, बल्कि** (असल में) **वो ही है अल्लाह** (यानी सच्चा माबूद) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला**(27)।

नोटः- यहां दीन के लिए किये जाने वाले मुनाज़रे और बहसो मुबाहिसे का तरीक़ा मालूम हुआ कि मंशा नसीहत की होनी चाहिए और ऐसा तरीक़ा अपनाना चाहिए जिससे मुख़ालिफ़ को नागवारी न हो।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

आयत नं० 28

और हमने तो आप को सारे लोगों के वास्ते (चाहे जिन्नात हों या इन्सान, अरब वाले हों या दुनिया के दूसरे लोग, मौजूद हों या बाद में होने वाले हों सब के लिए) **पैग़म्बर बनाकर भेजा है** (ईमान लाने पर उनको हमारी रज़ामन्दी व सवाब की) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और** (ईमान न लाने पर उनको हमारे ग़ुस्से व अज़ाब से) **डराने वाला लेकिन बहुत से लोग नहीं समझते** (जहालत या हटधर्मी की वजह से इनकार और झुटलाने में लग जाते हैं)(28)।

नोटः- हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे पांच चीज़ें ऐसी दी गईं हैं जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं मिलीं:-

(1)- एक यह कि मेरी मदद अल्लाह तआ़ला ने मुझे ऐसा रौब देकर की है कि एक महीने की दूरी तक लोगों पर मेरा रौब छा जाता है।

(2)- दूसरे यह कि मेरे लिए पूरी ज़मीन को मस्जिद और पाक बना दिया गया है (पहले नबियों की शरीअतों में उनकी इबादत ख़ास इबादतगाहों ही में होती थी उनकी मस्जिदों से बाहर मैदान या घर में इबादत न होती थी और मिट्टी को ऐसा पाक बनाया कि पानी न मिलने की सूरत में मिट्टी से तयम्मुम कर लिया जाए तो वुज़ू की जगह हो जाता है)।

(3)- तीसरे यह कि मेरे लिए माले ग़नीमत हलाल कर दिया गया है मुझ से पहले किसी उम्मत के लिए यह हलाल नहीं था (बल्कि हुक्म यह था कि जंग में जो माल काफ़िरों का हाथ आता उसको जमा करके एक जगह रख दें वहां एक आसमानी आग बिजली वग़ैरह आकर उसको जला देगी और यह जला देना ही उस जिहाद के क़ुबूल होने की निशानी होगी जबकि इस उम्मत के लिए माले ग़नीमत को क़ुरआन के बताए हुए उसूल के हिसाब से बान्ट लेना और अपनी ज़रूरतों में ख़र्च कर लेना जाइज़ कर लिया दिया गया) ।

(4)- चौथे यह कि मुझे शफ़ाअते कुबरा का मक़ाम दिया गया (यानी हश्र के मैदान में जिस वक़्त कोई पैग़म्बर सिफ़ारिश की हिम्मत न करेगा मुझे उस वक़्त सिफ़ारिश का मौक़ा दिया जाएगा) ।

(5)- पांचवे यह कि मुझ से पहले हर नबी अपनी ख़ास क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था मुझे सारी दुनिया की क़ौमों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा गया है। (इब्ने कसीर)

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۹﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّ لَا
تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ لَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ
الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ۨالْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا لَوْ لَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ
الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ
الَّيْلِ وَ النَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ وَ اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَ
جَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۳﴾

आयत नं० 29 से 33

और ये लोग (क़ियामत में जमा होने के बारे में सुनकर) **कहते हैं कि** (क़ियामत के आने का) **वादा कब** (पूरा) **होगा अगर तुम** (यानी नबी और आप के मानने वाले) **सच्चे हो** (तो बताओ)(29) **आप कह दीजिए कि तुम्हारे वास्ते एक ख़ास दिन का वादा** (तय) **है उससे एक घड़ी न पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो** (यानी चाहे हम वक़्त न बताएं जो तुम पूछ रहे हो

मगर आएगी ज़रूर जिसके बारे में पूछने का मतलब तुम्हारा इनकार करना है)(30) **और ये काफ़िर लोग** (दुनिया में तो ख़ूब बातें बनाते हैं और) **कहते हैं कि हम हरगिज़ इस क़ुरआन पर ईमान न लाएंगे और न इससे पहली किताबों पर, और** (क़ियामत में ये सारी लम्बी चौड़ी बातें ख़त्म हो जाएंगी बस) **अगर आप** (उनकी) **उस वक़्त की हालत देखें** (वो एक डरावनी सूरत दिखाई दे) **जब कि ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किये जाएंगे तो एक दूसरे पर बात टालता होगा** (जैसा कोई काम बिगड़ जाने के वक़्त आदत होती है बस) **छोटे दर्जे के लोग** (यानी पीछे चलने वाले) **बड़े लोगों** (यानी अपने सरदारों) **से कहेंगे कि** (हम तो तुम्हारी वजह से बर्बाद हुए) **अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आए होते**(31) (इस पर) **ये बड़े लोग उन छोटे दर्जे के लोगों से कहेंगे कि क्या हम ने तुम को सीधे रास्ते** (पर चलने) **से** (ज़बरदस्ती) **रोका था जब कि वो** (सीधी राह) **तुम को पहुंच चुकी थी नहीं बल्कि तुम ही क़ुसूरवार** (हो कि असलीयत जानने के बाद भी उसको न माना अब हमारे सर रखते) **हो**(32) **और** (उसके जवाब में) **ये कम दर्जे के लोग उन बड़े लोगों से कहेंगे कि** (हम यह नहीं कहते कि तुमने ज़बरदस्ती की थी) **नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की कोशिशों ने रोका था जब तुम हमें कहते रहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और उसके साथ** (दूसरों को) **साझी मानें, और** (दिल में दोनों अपने को क़ुसूरवार समझ कर पछताते होंगे लेकिन) **वो लोग** (अपने इस) **पछतावे को** (एक दूसरे से) **छुपाए रक्खेंगे जब कि** (अपने-अपने कारनामों पर) **अज़ाब** (होता हुआ) **देखेंगे, और हम** (सब) **काफ़िरों की गर्दनों में पट्टे डालेंगे** (और हाथ पैर में जंजीर फिर बन्धा हुआ जहन्नम में डाल दिया जाएगा), **जैसा करते थे वैसा ही तो भरा**(33)।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا
وَّ اَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۳۵﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۫ فَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي
الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۸﴾

आयत नं० 34 से 38

और (ऐ पैग़म्बर इन लोगों की जहालत और गुमराही की बातों से आप दुखी न हों क्योंकि यह क़िस्सा अनोखा आप ही के साथ नहीं बल्कि) **हम ने जिस किसी बस्ती में कोई ख़बरदार करने वाला** (पैग़म्बर) **भेजा** (तो) **वहां के ख़ुशहाल लोगों ने** (इस दौर के काफ़िरों की तरह) **ये ही कहा कि हम तो उन हुक्मों का इनकार करते हैं जो तुम को देकर भेजा गया है(34) और** (इन्हीं की तरह) **उन्होंने यह भी कहा कि हम माल और औलाद में तुम से ज़्यादा हैं और** (यह दलील है हमारे इज़्ज़तदार और अल्लाह का हम से राज़ी होने की बस) **हम को कभी अज़ाब न होगा(35) आप** (उन से) **कह दीजिए कि** (किसी के पास माल का ज़्यादा होना उससे अल्लाह के राज़ी होने की निशानी नहीं है बल्कि) **मेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है कम देता है** (और उसमें भलाई छुपी होती हैं) **लेकिन** (मालदार होना अल्लाह के राज़ी होने की निशानी नहीं इस बात को) **अक्सर लोग समझते नहीं(36) और** (ऐ काफ़िरों यह भी सुन लो कि) **तुम्हारे माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो तुम को दर्जे में हमारा नज़दीकी बना दे हां मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम करे** (ये दोनो चीज़ें तो अल्लाह का नज़दीकी बनाने वाली हैं) **सो ऐसे लोगों के लिए उनके** (नेक) **कामों का दो गुना बदला है** (यानी कामों से ज़्यादा सवाब) **और वो** (जन्नत के) **झरोंकों में चैन से** (बैठे) **हों गे(37) और जो लोग** (इसके उलट सिर्फ़ माल और औलाद पर घमन्ड करते हैं और न ईमान लाते न नेक काम करते हैं बल्कि वो) **हमारी आयतों के बारे में** (उनके झुटलाने की) **कोशिश कर रहे हैं** (नबी को) **हराने के लिए ऐसे लोग अज़ाब में लाए जाएंगे(38)।**

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखता वो तो तुम्हारे दिलों को और आमाल को देखता है। (इब्ने कसीर)

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ يَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۳۹﴾

आयत नं० 39

आप (मोमिनों से) **यह कह दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे कम देता है, और** (ख़र्च में कन्जूसी से माल बढ़ नहीं सकता और शरीअत के हिसाब से ख़र्च करने से घट नहीं सकता इसलिए तुम माल से दिल न लगाओ बल्कि जहां जहां ख़र्च करने का हुक्म है बेधड़क ख़र्च करते रहो कि जितनी रोज़ी नसीब में है इससे वो कम नहीं हो सकती क्योंकि) **जो चीज़ तुम** (अल्लाह के हुक्म के मौक़ों में) **ख़र्च करोगे तो अल्लाह तआ़ला उस का** (आख़रत में तो ज़रूर और अक्सर दुनिया में भी) **बदला देगा और वो सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है(39)।**

नोटः- एक हदीस में है कि नेक काम सदक़ा है और कोई आदमी जो अपनी जान या अपने घर वालों पर ख़र्च करता है वो भी सदक़े के हुक्म में है उस पर भी सवाब है और जो आदमी कुछ ख़र्च करके अपनी आबरू बचाए वो भी सदक़ा है और जो आदमी अल्लाह के हुक्म से कुछ ख़र्च करता है तो अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उसका बदल उसको देगा मगर वो ख़र्च जो मकान बनाने में (ज़रूरत से ज़्यादा हो) या किसी गुनाह के काम में किया हो उसके बदल का वादा नहीं। (क़रतबी)

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ
دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّ
لَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾

आयत नं० 40 से 42

और (वो दिन न भूलो) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन सब को** (क़ियामत के मैदान में) **जमा करेगा फिर फ़रिशतों से कहेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे** (फ़रिशतों से यह सवाल मुशरिकों को लाजवाब करने के लिए होगा जो फ़रिशतों को और दूसरों को यह सोचकर पूजते थे कि ये राज़ी होकर हमारी सिफ़ारिश करेंगे)**(40) वो** (फ़रिशते) **कहेंगे कि आप** (शरीक से) **पाक हैं हमारा तो** (सिर्फ़) **आप से ताल्लुक़ है न कि इन से** (यानी न हमने इन से कहा और न इस बात से राज़ी हम तो आप के ताबेदार हैं जो चीज़ आप को नापसन्द है जैसे शिर्क उससे हम

नाख़ुश हैं और असल में ये हमारी इबादत न करते थे) **बल्कि ये लोग शैतानों को पूजा करते थे** (क्योंकि शैतान ही इस बात को उकसाते थे और इससे राज़ी भी थे इसलिए वो ही इन के माबूद हुए) **इनमें अक्सर लोग उन ही** (शैतानों) **का ऐतक़ाद रखते** (थे यानी जान बूझकर भी बहुत से उन को पूजते) **थे (41) सो** (काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिन से तुम उम्मीदें रखते थे) **आज** (ख़ुद उन के इनकार से भी और उन की बेबसी से भी साबित हुआ कि) **तुम** (सब माबूदों और इबादत करने वालों) **में से न किसी के नफ़ा पहुंचाना बस में है न नुक़सान पहुंचाना** (यानी ये माबूद तुम को कोई नफ़ा नहीं पहुंचा सकते), **और** (उस वक़्त) **हम ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **से कहेंगे कि जिस दोज़ख़ के अज़ाब को तुम झुटलाया करते थे** (अब) **उसका मज़ा चक्खो (42)।**

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَ قَالُوْا
مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۴۳﴾ وَ مَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَ مَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿۴۴﴾ؕ وَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَ مَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ
مَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۵﴾ؒ قُلْ اِنَّمَاۤ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَ فُرَادٰى ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿۴۶﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ
اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۴۷﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ ﴿۴۸﴾ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ مَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَ مَا يُعِيْدُ ﴿۴۹﴾ قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَاۤ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَ اِنِ
اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْۤ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿۵۰﴾

आयत नं० 43 से 50

और जब इन लोगों के सामने हमारी आयतें जो (हक़ और सीधी राह दिखाने की ख़ूबी में) **साफ़-साफ़ हैं पढ़ी जाती हैं तो ये लोग** (पढ़ने वाले यानी नबी के बारे में) **कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **यह तो बस एक ऐसा आदमी है जो यह चाहता है कि तुम को उन चीज़ों** (की इबादत) **से बाज़ रक्खे जिन को** (बहुत पहले से) **तुम्हारे बड़े पूजते** (आरहे) **थे** (और उनसे रोक कर अपना ताबेदार बनाना चाहता है मतलब उन कम्बख़्तों का यह था कि ये नबी नहीं और इनकी दावत अल्लाह की तरफ़ से नहीं बल्कि इसमें इनका अपना मतलब हुकूमत करना है) **और** (क़ुरआन के

बारे में) **कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **यह तो बस एक घड़ा हुआ झूट** (है यानी इस को अल्लाह का कलाम कहना घड़ी हुई बात) **है, और ये काफ़िर इस हक़ बात** (यानी क़ुरआन) **के बारे में जब कि वो उनके पास पहुंचा** (इस बात पर कि अगर यह घड़ी हुई बात है तो बहुत से समझदार इसे क्यों मानते हैं तो जवाब में) **यह कहते हैं कि यह तो बस एक खुला जादू** (है यानी इसलिए समझदार आदमी भी इसे सुनकर होश खो बैठता है और इसका दीवाना हो जाता) **है(43) और** (इन को तो क़ुरआन और नबी की बड़ी क़द्र करना चाहिए थी क्योंकि उनके लिए तो ये बड़ी नेमतें थी कि) **हम ने** (इस क़ुरआन से पहले) **इन को** (कभी आसमानी) **किताबें नहीं दी थी कि उन को पढ़ते पढ़ाते हों** (जैसे बनी इस्राईल के पास किताबें थी तो इन के हक़ में तो क़ुरआन बिल्कुल एक नई चीज़ थी इसलिए उस की क़द्र करना चाहिए थी) **और** (इसी तरह) **हमने आप से पहले उनके पास कोई ख़बरदार करने वाला** (यानी पैग़म्बर) **नहीं भेजा था** (तो उन के लिए नबी भी एक नई दौलत थी इसलिए उन की भी क़द्र करना चाहिए थी ख़ास कर जब कि उनकी तमन्ना भी थी कि उनके पास कोई नबी आए तो ये उसकी ताबेदारी करें मगर इन लोगों ने फिर भी क़द्र न की बल्कि झुटलाया)**(44) और** (ये लोग झुटलाकर बेफ़िक्र न हो बैठें क्योंकि झुटलाने का वबाल बड़ा सख़्त है जैसा कि) **इन से पहले जो काफ़िर लोग थे उन्होंने** (भी पैग़म्बरों और वही को) **झुटलाया था और ये** (अरब के मुशरिक) **तो उस सामान के जो हमने उनको दे रक्खा था दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचते** (यानी उनकी सी ताक़त उनकी सी उम्रें उनकी सी हुकूमत इनको नहीं मिली जो घमन्ड का सामान होता है सो ये बेचारे किस धोके में हैं) **बस उन्होंने मेरे रसूल को झुटलाया सो** (देखो) **मेरा** (उन पर) **कैसा अज़ाब** (हुआ उनकी दौलत उनके कुछ काम न आई और उनका कैसा अन्जाम) **हुआ(45)** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन से) **यह कहिए कि मैं तुम को सिर्फ़ एक** (छोटी सी) **बात समझाता हूं** (उससे साफ़ समझ में आजाएगा) **वो यह कि तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह के वास्ते** (यानी साफ़ दिल से) **खड़े** (यानी तैयार) **हो जाओ** (किसी मौक़े पर) **दो दो और** (किसी मौक़े पर) **एक-एक फिर** (ख़ूब) **सोचो कि** (जैसा दावा मैं करता हूं कि क़ुरआन जैसी एक आयत ही लाकर दिखा दो तो ऐसा दावा या तो नबी कर सकता है या वो जिस की अक्ल में ख़राबी हो जुनून हो गया हो तो) **तुम्हारे इस साथी को** (जो हर वक़्त तुम्हारे सामने रहता है और जिसकी हर बात को देखते हो यानी मुझ को) **जुनून** (तो) **नहीं है,** (और जब दीवाना नहीं है तो) **वो** (तुम्हारा साथी पैग़म्बर है और पैग़म्बर की हैसियत से) **तुम को एक सख़्त अज़ाब के आने से पहले डराने वाला** (है बस इस तरह से पैग़म्बरी का सबूत और उसकी तस्दीक़ बहुत आसान) **है(46)** (और हुकूमत चाहने का जो

इल्ज़ाम है उसके बारे में) **आप कह दीजिए कि मैंने तुम से** (इस तबलीग़ के काम पर) **कुछ बदला मांगा हो तो वो तुम्हारा ही रहा** (यानी तुम से कुछ बदला नहीं चाहता), **मेरा बदला तो बस** (वादे के हिसाब से) **अल्लाह ही के ज़िम्मे है और वो ही हर चीज़ का जानने वाला है**(47) **आप कह दीजिए कि मेरा रब हक़ बात को** (यानी ईमान और उसके सबूत को झूट यानी कुफ़्र और इनकार पर) **हावी कर रहा है** (और) **वो छुपी बातों का जानने वाला** (है उसको सब बातों की पहले से ख़बर) **है**(48) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप कह दीजिए कि** (दीने) **हक़ आगया और झूट** (यानी झूटा दीन) **न करने का रहा न धरने का** (यानी उसका झूट होना बिल्कुल साफ़ हो गया)(49) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि** (जब इस दीन का हक़ होना साबित हो गया तो इससे यह भी ज़रूरी हो गया कि) **अगर** (मान लो) **मैं** (इस हक़ को छोड़ कर) **गुमराह हो जाऊं तो मेरी गुमराही का मुझ ही को नुक़सान होगा** (दूसरों का क्या नुक़सान है) **और अगर मैं** (इस हक़ की ताबेदारी करके) **सीधे रास्ते पर हूं तो यह इस क़ुरआन** (और दीन) **की वजह से है जिसको मेरा रब मेरे पास भेज रहा** (है मतलब यह कि अगर तुम ने हक़ का रास्ता न अपनाया तो तुम भुगतोगे मेरा क्या बिगड़ेगा और अगर राह पर आ गये तो यह राह पर आना इसी सच्चे दीन की ताबेदारी की वजह से होगा बस तुम को चाहिए कि सीधे रास्ते पर आने के लिए इस दीन को अपनाओ और अल्लाह को सब का हाल मालूम) **है,** (वो हर एक को उसके हिसाब से बदला देगा क्योंकि) **वो सब कुछ सुनता** (है और) **बहुत नज़दीक है**(50)।

وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۙ﴿۵۱﴾ وَّقَالُوْۤا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۭ
بَعِيْدٍ ۚۖ﴿۵۲﴾ وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۳﴾ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا
يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿۵۴﴾

आयत नं० 51 से 54

और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अगर आप वो वक़्त देखें** (तो आप को अचम्भा हो) **जब ये** (काफ़िर) **लोग** (क़ियामत के डर व दहशत से) **घबराए फिरेंगे फिर निकल भागने की कोई सूरत न होगी और पास के पास ही से** (यानी फ़ौरन) **पकड़ लिये जाएंगे**(51) **और** (उस वक़्त) **कहेंगे कि हम इस हक़ पर ईमान ले आए** (और जितनी बातें इसमें बताई हैं सब को मान

लिया इसलिए हमारी तौबा कुबूल करली जाए चाहे दुनिया में भेज कर या बिना भेजे हुए) **और इतनी दूर जगह से** (ईमान) **उनके हाथ कहां आ सकता** (है यानी ईमान लाने और आमाल की जगह दुनिया थी जो बड़ी दूर हो गई अब आख़रत है जो आमाल की जगह नहीं फल की जगह है इसमें ईमान कुबूल नहीं होता क्योंकि अब जो ईमान होगा वो ग़ैब पर ईमान नहीं बल्कि देख लेने के बाद) **है(52) जब कि पहले से** (दुनिया में) **ये लोग इस हक़ का इनकार करते रहे और दूर ही से अटकल के तीर चलाते रहे** (यानी बे सोचे समझे दुनिया में तो कुफ़्र करते रहे अब ईमान सूझा है और उसके कुबूल होने की आरजू है)**(53) और** (चूंकि आख़रत अमल की जगह नहीं है इसलिए) **उनमें और उन** (के ईमान कुबूल होने) **की आरज़ू में एक दीवार कर दी जाएगी** (यानी उनकी आरज़ू पूरी न होगी) **जैसा कि उन के जैसे तरीक़े वालों के साथ** (भी) **ये ही** (बरताव) **किया जाएगा जो उनसे पहले** (कुफ़्र कर चुके) **थे, ये सब बड़े शक में थे जिसने उन को उलझन** (और धोके) **में डाल रक्खा था(54)।**

नोटः- दुनिया में कोई मुजरिम भाग जाए तो उस को तलाश करना पड़ता है लेकिन मैदाने हश्र में सब के सब अपनी ही जगह में गरिफ़्तार कर लिए जाएंगे किसी काफ़िर को भागने का मौक़ा न मिलेगा।

35-सूरत-फ़ातिर

इस मक्की सूरत में '5' रूकू और '45' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ
مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝۱ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا
مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۲ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ
اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝۳

आयत नं० 01 से 03

सभी तारीफ़ (हम्दो सना उसी) **अल्लाह के लिए है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है जो फ़रिशतों को पैग़ाम ले जाने के लिए बनाने वाला है जिन के दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पंख** (हैं पैग़ाम ले जाने से मुराद नबियों के पास वही लाना है और उनके पंख चार से ज़्यादा भी हो सकते) **हैं,** (क्योंकि) **वो पैदाइश में जो चाहता है ज़्यादा कर देता** (है यहां तक कि कुछ फ़रिशतों के छः सौ पंख पैदा किये हैं जैसा कि हदीस में हज़रत जिबरील के बारे में आया) **है, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ की कुदरत रखने वाला है(01)** (और कुदरत वाला भी ऐसा जिस का कोई रोकने वाला नहीं कि वो) **अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोल दे** (जैसे बारिश, खेती और आम रोज़ी) **तो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं और जिसको बन्द कर दे तो उस के** (बन्द करने के) **बाद उस का कोई जारी करने वाला नहीं** (लेकिन वो ख़ुद ही ये काम कर सकता है)**, और वो ही ज़बरदस्त** (कुदरत वाला) **हिकमत वाला** (है यानी हर काम हिकमत से करता) **है(02) ऐ लोगो तुम पर जो अल्लाह के अहसान** (और नेमतें) **हैं उन को याद** (करो और उनका शुक्र अदा करो और वो शुक्र यह है कि शिर्क छोड़ दो और सिर्फ़ उस की ही इबादत) **करो,** (कम से कम उसकी दो बड़ी नेमतों को सोचो कि) **क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है जो तुम को आसमान व ज़मीन से रोज़ी देता हो** (यानी उसके सिवा न कोई पैदा करने

वाला और न रोज़ी पहुंचाने वाला, तो बेशक) **उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़** (भी) **नहीं तो** (जब इबादत उसी का हक़ है तो) **तुम** (शिर्क करके) **कहां उल्टे जा रहे हो(03)।**

नोटः- एक हदीस में यह दुआ आई है कि ‘‘या अल्लाह जो चीज़ आप किसी को देदें उसका कोई रोकने वाला नहीं और जिसको आप रोकें उसको कोई देने वाला नहीं। आपके इरादे के ख़िलाफ़ किसी करने वाले की कोशिश नहीं चलती। (इब्ने कसीर)

وَ اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٙ وَ لَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٥ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا
يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ؕ۝٦ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ۬ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖؗ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝٨

आयत नं० 04 से 08

और (ऐ पैग़म्बर) **अगर ये लोग** (तौहीद व पैग़म्बरी के बारे में) **आप को झुटलाएं तो** (आप ग़म न करें क्योंकि) **आप से पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुटलाए जा चुके हैं** (एक तो इससे तसल्ली हासिल कीजिए)**, और** (दूसरी बात यह कि) **सब काम अल्लाह ही के सामने पेश किये जाएंगे** (वो ख़ुद सब समझ लेगा आप क्यों फ़िक्र में पड़े)**(04) ऐ लोगो** (क़ियामत की ख़बर सुन कर अचम्भा मत करना) **अल्लाह तआ़ला का** (यह) **वादा ज़रूर सच्चा है सो ऐसा न हो कि यह दुनिया की ज़िन्दगी तुम को धोके में डाले रक्खे** (कि इसमें खप कर उस आने वाले दिन को भूल जाओ) **और ऐसा न हो कि तुम को धोके बाज़** (शैतान) **धोके में डाल दे** (कि तुम उसके बहकाने में न आजाओ कि अल्लाह तआ़ला तुम को अज़ाब न देगा)**(05) यक़ीन जानो** (वो) **शैतान तुम्हारा दुशमन है सो तुम उस को** (अपना) **दुशमन** (ही) **समझते रहो, वो तो अपने मानने वालों को सिर्फ़ इसलिए** (बुराई की तरफ़) **बुलाता है ताकि वो लोग दोज़ख़ी हो जाएं(06)** (बस) **जो लोग काफ़िर हो गये** (और उसके धोके में फंस गये) **उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और जो लोग ईमान ले आए और अच्छे काम किये** (और उसके धोके में नहीं फंसे) **उनके लिए** (गुनाहों की) **बख़शिश और** (ईमान व नेक कामों पर) **बड़ा सवाब है(07)** (और जब काफ़िर व मोमिन का अन्जाम जान

चुके) **तो क्या** (दोनों बराबर हो सकते हैं यानी) **ऐसा आदमी जिस को उसका बुरा काम अच्छा करके दिखाया गया फिर वो उसको अच्छा समझने लगा** (और ऐसा आदमी जो बुरे को बुरा समझता है कहीं बराबर हो सकते हैं)**, सो** (इसकी वजह यह है कि) **अल्लाह तआ़ला जिसको चाहता रास्ते से भटका देता है** (उसकी अक़्ल उल्टी हो जाती है) **और जिसको चाहता है सही राह पर लगा देता** (है उसकी समझ सही रहती) **है, तो इस पर अफ़सोस कर करके कहीं आप की जान न जाती रहे** (यानी कुछ अफ़सोस न कीजिए सब्र से बैठे रहिए)**, अल्लाह तआ़ला** (वक़्त पर उनसे समझ लेगा क्योंकि उस) **को इनके** (सब) **कामों की ख़बर है**(08)।

नोटः- शैतान इन्सान को यह धोका देता है कि बुरे कामों को अच्छा साबित करके उनमे डाल देता है और वो गुनाह करते हुए यह समझता रहता है कि हम अल्लाह के नज़दीक मक़बूल हैं हमें अज़ाब नहीं होगा। (क़ुरतबी)

وَاللّٰهُ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰی بَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَحْیَیْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ
النُّشُوْرُ ۝۹ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِیْعًا ؕ اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّیِّبُ وَ الْعَمَلُ الصَّالِحُ یَرْفَعُهٗ ؕ وَ
الَّذِیْنَ یَمْكُرُوْنَ السَّیِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ؕ وَ مَكْرُ اُولٰٓىِٕكَ هُوَ یَبُوْرُ ۝۱۰ وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَ مَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰی وَ لَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَ مَا یُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّ لَا یُنْقَصُ
مِنْ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَی اللّٰهِ یَسِیْرٌ ۝۱۱ وَ مَا یَسْتَوِی الْبَحْرٰنِ ۖۗ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآىِٕغٌ شَرَابُهٗ وَ
هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَ مِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِیًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْیَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَی الْفُلْكَ فِیْهِ
مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۱۲ یُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ یُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ ۙ وَ سَخَّرَ
الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ۖؗ كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا
یَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِیْرٍ ۝۱۳ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا یَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَ لَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ
یَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَ لَا یُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِیْرٍ ۝۱۴

आयत नं० 09 से 14

और अल्लाह ऐसा (क़ुदरत वाला) **है जो** (बारिश से पहले) **हवाओं को भेजता है फिर वो** (हवाएं) **बादलों को उठाती हैं फिर हम उस बादल को ज़मीन के सूखे हिस्से की तरफ़ चला**

कर ले जाते हैं (जिससे वहां बारिश होती है) **फिर हम उस** (बादल के पानी) **से ज़मीन को** (पैदावार से) **ज़िन्दा कर देते हैं उसके** (सूखे से) **मुर्दा हो जाने के बाद,** (बस) **इसी तरह** (क़ियामत में इन्सानों का) **जी उठना है(09) जो आदमी** (आख़रत में) **इज़्ज़त पाना चाहता है तो** (उस को चाहिए कि अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करे क्योंकि) **सारी इज़्ज़त अल्लाह के क़ब्ज़े में** (है बस सब अल्लाह के मुहताज हैं और उसके पाने के लिए अल्लाह को राज़ी करे यानी नेक काम करे यह उस को राज़ी करने और इज़्ज़त पाने का तरीक़ा) **है,** (और) **पाक कलमा उसी तक पहुंचता है** (यानी वो उसको कुबूल करता है) **और अच्छा काम उस को पहुंचता है** (इसमें ईमान के साथ सभी नेक काम आगये)**, और जो लोग** (आप के ख़िलाफ़) **बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं उन को** (आख़रत में) **सख़्त अज़ाब होगा, और** (दुनिया में भी) **उनकी चाल मिलयामेट हो जाएगी** (यानी उन कोशिशों में उन को कामयाबी न होगी बस ऐसा ही हुआ कि वो इस्लाम को मिटाना चाहते थे ख़ुद ही मिट गये)(10) **और अल्लाह तआ़ला ने तुम को** (यानी तुम्हारे बाप आदम अलैहिस्सलाम को) **मिट्टी से पैदा किया फिर** (औलाद को यानी तुम को) **मनी से पैदा किया फिर तुम को जोड़े-जोड़े बनाया** (यानी कुछ मर्द कुछ औरत यह तो उसकी कुदरत है)**, और** (इल्म उसका ऐसा है कि) **किसी औरत को पेट में जो बच्चा होता है और जो कुछ जन्म देती है वो सब उस के इल्म से होता** (है यानी उस को पहले से सब की ख़बर होती) **है, और** (इसी तरह) **न किसी की उम्र ज़्यादा** (तय) **की जाती है और न किसी की उम्र कम** (तय) **की जाती मगर यह सब** (तक़दीर की) **एक किताब में** (लिखा हुआ होता) **है, बेशक यह सब कुछ अल्लाह को आसान है(11) और** (आगे कुदरत की और निशानियां सुनो कि) **दोनो दरिया बराबर नहीं हैं** (बल्कि) **एक तो मीठा प्यास बुझाने वाला है जिसका पीना भी आसान है और दूसरा कड़वा नमकीन है, और तुम हर एक** (दरिया) **से** (मच्छलियां निकाल कर उनका) **ताज़ा गोश्त खाते हो और** (ऐसे ही) **ज़ेवर** (यानी मोती) **निकालते हो जिसको तुम पहनते हो, और तुम कश्तियों को देखते हो पानी को फाड़ती हुई चलती हैं ताकि तुम** (उन से सफ़र करके) **उसकी रोज़ी तलाश करो और ताकि** (रोज़ी पाकर) **तुम** (अल्लाह का) **शुक्र करो(12)** (और कुछ और नेमतें हैं जैसे यह कि) **वो रात** (के हिस्से) **को दिन** (के हिस्से) **में मिला देता है और दिन** (के हिस्से) **को रात** (के हिस्से) **में मिला देता है** (जिससे दिन और रात घटने बढ़ने से जुड़े फ़ाइदे मिलते हैं) **और** (जैसे यह कि) **उसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है** (उनमें से) **हर एक तय वक़्त** (यानी क़ियामत के दिन) **तक** (इसी तरह) **चलते रहेंगे, ये ही अल्लाह** (जिस की यह शान है) **तुम्हारा रब है उसी की हुकूमत**

है, और उसके सिवा जिन को पुकारते हो वो तो खुजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी हक़ नहीं रखते (यानी कुछ भी उनके बस में नहीं)(13) **अगर तुम** (उन को) **पुकारो तो भी वो** (एक तो) **सुनेंगे नहीं** (बेजान तो सुन ही नहीं सकते और जानदार का मरने के बाद सुनना ज़रूरी नहीं जब अल्लाह चाहे सुना दे जब न चाहे न सुनाए) **और अगर** (मान लो) **सुन भी लें तो तुम्हारा कहना** (पूरा) **न करेंगे, और क़ियामत के दिन वो** (ख़ुद) **तुम्हारे शिर्क करने की मुख़ालफ़त करेंगे, और** (हम ने जो कुछ बताया है उस की सच्चाई में ज़रा शक न करो क्योंकि) **तुम को सारी बातों की ख़बर रखने वाले की बराबर कोई नहीं बताएगा** (बस हमारा बताना सबसे ज़्यादा सही है)(14)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआला किसी क़ौल (बयान) को बिना अमल के और किसी कौल व अमल को बिना नीयत के और किसी कौल व अमल और नीयत को बिना सुन्नत के हिसाब से होने के पूरी तरह क़बूल नहीं करता। (क़रतबी)

इससे मालूम हुआ कि पूरी तरह कुबूल होने की शर्त सुन्नत के हिसाब से होना है।

मसअलाः- ऊपर आयत से मालूम हुआ कि मोतियों का इस्तेमाल मर्दों के लिए भी जाइज़ है मगर सोने चान्दी के ज़ेवर का इस्तेमाल करना मर्दों के लिए जाइज़ नहीं।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾
وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۷﴾ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَیْءٌ
وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى
لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ وَمَا يَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿۱۹﴾ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿۲۰﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا
الْحَرُوْرُ ﴿۲۱﴾ وَمَا يَسْتَوِی الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِی الْقُبُوْرِ ﴿۲۲﴾
اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿۲۴﴾ وَاِنْ
يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ
اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 15 से 26

ऐ लोगो तुम (ही) **अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह** (तो) **बेनियाज़** (है यानी किसी का मुहताज नहीं और ख़ुद सारी) **ख़ूबियों वाला है**(15) **अगर** (तुम नहीं मानोगे तो ख़ुद नुक़सान उठाओगे मगर अल्लाह को तुम्हारे कामों की कुछ ज़रूरत नहीं अगर) **वो चाहे तो** (तुम्हारे कुफ़्र की सज़ा में) **तुम को फ़ना कर दे और एक नई मख़्लूक़ पैदा कर दे** (जो तुम्हारी तरह कुफ़्र व इनकार न करें)(16) **और यह बात अल्लाह को कुछ मुश्किल नहीं** (है लेकिन ख़ास वजह से मोहलत दे रक्खी) **है**(17) **और** (क़ियामत में यह हालत होगी कि) **कोई दूसरे** (के गुनाह) **का बोझ न उठाएगा, और** (ख़ुद तो कोई किसी की मदद क्या करता बल्कि) **अगर कोई बोझ का लदा हुआ** (यानी कोई गुनाहगार) **किसी को अपना बोझ उठाने के लिए बुलाएगा** (भी) **तब भी उसमें से कुछ भी बोझ न हटाया जाएगा चाहे वो आदमी** (जिस को उसने बुलाया था उसका) **नज़दीकी रिश्तेदार ही** (क्यों न हो यानी कोई किसी के गुनाहों का बोझ अपने ज़िम्मे लेकर उसके गुनाहों का बोझ हल्का नहीं कर सकता चाहे कितना ही नज़दीकी) **हो** (बस उस वक़्त पूरा नुक़सान उस कुफ़्र और बुरे कामों का ख़ुद ही भुगतना पड़ेगा), **आप** (ऐ पैग़म्बर उनके इनकार पर जिस की सज़ा एक दिन ज़रूर ये भुगतेंगे इतना ग़म व अफ़सोस क्यों करते हो आप) **तो** (ऐसा डराना जिससे फ़ाइदा हो) **सिर्फ़ ऐसे लोगों को डरा सकते हैं जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते** (हैं यानी आप के डराने से सिर्फ़ मोमिन फ़ाइदा उठा सकते) **हैं, और जो आदमी** (ईमान लाकर शिर्क व कुफ़्र से) **पाक होता है वो अपने** (नफ़े के) **लिए पाक होता है, और** (जो ईमान नहीं लाता वहां भुगतेगा क्योंकि सब को) **अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है** (बस नफ़ा है तो उनका आप क्यों ग़म करते हैं)(18) **और** (इन लोगों से ईमान लाने की उम्मीद रखना बेकार है क्योंकि) **अन्धा और आंखों वाला बराबर नहीं** (हो सकते)(19) **और न अन्धेरा और रौशनी** (बराबर हो सकते हैं)(20) **और न छांव और धूप** (बराबर हो सकते हैं)(21) **और** (मोमिन व काफ़िर तो ज़िन्दा और मुर्दा जैसे हैं और) **ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते,** (और जब ये मुर्दे हैं तो मुर्दों को ज़िन्दा करना तो अल्लाह की क़ुदरत में है बन्दे के बस में नहीं बस अगर अल्लाह ही उन को राह पर ले आए तो और बात है क्योंकि) **अल्लाह जिस को चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में** (दफ़्न) **हैं**(22) (लेकिन अगर ये न मानें तो आप ग़म में न पड़िए क्योंकि) **आप तो** (काफ़िरों के हक़ में) **सिर्फ़ डराने वाले हैं**(23) (आप के ज़िम्मे यह नहीं कि वो काफ़िर डर कर मान भी जाएं, और डराना आप का अपनी तरफ़ से नहीं जैसा कि पैग़म्बरी का इनकार करने वाले कहते थे बल्कि

हमारी तरफ़ से है क्योंकि) **हम ही ने आप को सच्चा दीन देकर** (मुसलमानों को) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और** (काफ़िरों को) **डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है, और** (यह भेजना कोई अनोखी बात नहीं जैसा काफ़िर कहते थे बल्कि) **कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला** (यानी पैग़म्बर) **न हुआ हो(24) और अगर ये लोग आप को झुटलाएं तो जो लोग इनसे पहले हुए उन्होंने भी** (अपने वक़्त के पैग़म्बरों को) **झुटलाया था** (और) **उन के पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े और सहीफ़े और रौशन किताबें लेकर आए** (थे यानी कुछ छोटी किताबें और कुछ बड़ी किताबें और कुछ सिर्फ़ मोजिज़े पैग़म्बरी की तस्दीक़ के लिए और पहले पैग़म्बरों के हुक्म लेकर आए) **थे(25) फिर** (जब उन्होंने झुटलाया तो) **मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया सो** (देखो) **मेरा कैसा अज़ाब हुआ** (इसी तरह इनके वक़्त पर इन को सज़ा दूंगा)(26)।

नोटः- सुनाने से मुराद वो सुनाना है जिसका असर और नफ़ा हो वर्ना यूं तो काफ़िरों को सुनाना होता ही रहता था।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّ حُمْرٌ
مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَ غَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَ مِنَ النَّاسِ وَ الدَّوَآبِّ وَ الْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا
يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾

आयत नं० 27 से 28

क्या तुम ने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी उतारा फिर हम ने उस (पानी) **से रंग बरंग के फल** (फूल) **उगाए, और** (इसी तरह) **पहाड़ों के भी अलग-अलग हिस्से हैं** (कुछ) **सफ़ेद और** (कुछ) **लाल कि** (फिर) **उन** (सफ़ेद लाल) **के भी रंग अलग-अलग हैं** (कुछ बहुत सफ़ेद और बहुत लाल कुछ हल्के सफ़ेद और हल्के लाल) **और** (कुछ न सफ़ेद न लाल बल्कि) **बहुत काले सियाह(27) और इस तरह इन्सानों और जानवरों और चौपायों** (पालतू जानवरों) **में भी कुछ ऐसे हैं कि उनके रंग अलग-अलग हैं,** (तो जो लोग क़ुदरत की निशानियों के बारे में सोचते हैं उन को अल्लाह तआ़ला की बड़ाई का इल्म होता है और) **अल्लाह से उस के वो ही बन्दे डरते हैं जो** (उस की बड़ाई का) **इल्म रखते हैं, सचमुच अल्लाह तआ़ला** (से डरना भी ज़रूरी है क्योंकि वो) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **है** (कि सब कुछ कर सकता है और

अपने मतलब के लिए भी ज़रूरी है क्योंकि वो डरने वालों के गुनाहों का) **बड़ा बख़्शने वाला है**(28)।

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि ''बहुत सी हदीसें याद कर लेना बहुत बातें करना कोई इल्म नहीं बल्कि इल्म वो है जिसके साथ अल्लाह का डर हो''। (इब्ने कसीर)

हज़रत नबी बिन आस रज़ि० ने फ़रमाया ''जो अल्लाह से नहीं डरता वो आलिम नहीं''।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۙ﴿۲۹﴾
لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۳۰﴾ وَ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۳۱﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ
فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَ مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿ؕ۳۲﴾
جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ لُؤْلُؤًا ۚ وَ لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۳۳﴾ وَ قَالُوا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۙ﴿۳۴﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا
يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿۳۵﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَ لَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿ۚ۳۶﴾ وَ هُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ
صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَ لَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَ جَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا
لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿ع۳۷﴾

आयत नं० 29 से 37

और जो लोग अल्लाह की किताब (यानी कुरआन) **की तिलावत** (अमल के साथ) **करते रहते हैं और** (ख़ास ध्यान के साथ) **नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से छुपाकर और ऐलानिया** (जिस तरह बन पड़ता है नेक कामों में) **ख़र्च करते हैं वो** (अल्लाह के वादे की वजह से सदा के नफ़े वाले) **ऐसे कारोबार के उम्मीदवार हैं जिसमें कभी नुक़सान न होगा** (क्योंकि इस सौदे का ख़रीदार अल्लाह है जिसकी क़द्रदानी में कभी कमी नहीं होती)(29) **ताकि उन को उन** (के नेक कामों) **का बदला** (भी) **पूरा** (पूरा) **दें** (जिसका बयान आगे

आएगा) **और** (बदले के सिवा) **उनको अपनी महरबानी से और ज़्यादा** (भी) **दें** (जैसे एक नेकी का सवाब दस के बराबर), **बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला बड़ा क़द्रदान है** (बस उनके कामों में कुछ कमी रह भी गई तब भी उसकी ऐसी क़द्र की कि बदले के अलावा इनआम भी दिया)(30) **और** (क़ुरआन मजीद पर अमल करने की बरकत से जो इनआम मिला तो सचमुच क़ुरआन मजीद ऐसी ही चीज़ है क्योंकि) **यह किताब जो हम ने आप के पास वही के तौर पर भेजी है यह बिल्कुल ठीक है जो कि अपने से पहली किताबों की भी तस्दीक़ करती** (है कि उन को अल्लाह की भेजी हुई बताती है भले ही बाद में लोगों ने उन्हें बदल दिया) **है,** (और) **क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की** (हर बात की) **पूरी ख़बर रखने वाला** (और उनके फ़ाइदों को) **ख़ूब देखने वाला है** (इसलिए इस वक़्त ऐसी ही किताब उतारी)(31) **फिर यह किताब हम ने उन लोगों के हाथों में पहुंचाई जिन को हमने** (सारी दुनिया के) **अपने बन्दों में से** (ईमान के ऐतबार से) **पसन्द किया** (यानी मुसलमान) **फिर** (इन चुने हुए लोगों की तीन क़िस्में हैं कि) **कुछ तो इनमें** (कोई गुनाह करके) **अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और कुछ इनमें** (जो न गुनाह करते हैं और न ज़रूरी इबादतों से बढ़ते हैं) **औसत दर्जे के हैं और कुछ इनमें वो हैं जो अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों में तरक़्क़ी किये चले जाते हैं** (कि गुनाहों से भी बचते हैं कि फ़र्ज़ों के साथ नफ़्ली इबादतों की भी हिम्मत करते हैं बस हमने तीनों क़िस्म के मुसलमानों के हाथों में वो किताब पहुंचाई), **यह** (यानी ऐसी किताब का पहुंचा देना अल्लाह की) **बड़ी महरबानी है** (क्योंकि ऐसी किताब पर अमल करने की वजह से कैसे इनआम व सवाब के हक़दार हो गये)(32) **वो** (महरबानी व इनआम) **बाग़ हैं सदा रहने के जिसमें ये लोग दाख़िल होंगे** (और) **उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और लिबास उनका वहां रेशम का होगा**(33) **और** (वहां दाख़िल होकर) **कहेंगे अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने हम से** (सदा के लिए दुःख व) **ग़म दूर किया, बेशक हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला क़द्रदान है**(34) **जिसने हम को अपनी महरबानी से सदा रहने के घर में ला उतारा जहां हम को न कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न हम को कोई थकन होगी**(35) **और** (इसके उलट) **जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग है न तो उनको मौत ही आएगी कि मर ही जाएं** (और मर कर छूट जाएं) **और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा, हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं**(36) **और वो लोग उस** (दोज़ख़) **में** (पड़े हुए) **चिल्लाएंगे कि या रब हमारे हम को** (यहां से) **निकाल लीजिए हम** (अब ख़ूब) **अच्छे** (अच्छे) **काम करेंगे जो काम पहले किया करते थे उन को छोड़ कर,** (कहा जाएगा कि) **क्या हम ने**

तुम को इतनी उम्र न दी थी कि जिस को समझना होता वो समझ सकता और (ये ही नहीं बल्कि) **तुम्हारे पास** (हमारी तरफ़ से) **डराने वाला** (यानी पैग़म्बर) **भी पहुंचा था** (चाहे बिना वास्ता या वास्ते से बात पहुंची मगर तुम ने एक न सुनी)**, सो** (अब उस न मानने का) **मज़ा चक्खो कि ऐसे ज़ालिमों का** (यहां) **कोई मददगार** (नहीं हम तो नाराज़ी की वजह से मदद न करेंगे और दूसरे लोग मदद करने की क़ुदरत रखते) **नहीं(37)।**

नोटः- एक हदीस में है कि ''रेशमी लिबास न पहनो और सोने चान्दी के बरतनों में पानी न पियो और उनकी पलेट खाने में न बरतो क्योंकि ये चीज़ें दुनिया में काफ़िरों के लिए हैं और तुम्हारे लिए आख़िरत में''। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और एक हदीस में है कि ''जिस मर्द ने दुनिया में रेशमी कपड़ा पहना वो आख़रत में न पहन सकेगा''। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि दुनिया में रेशमी लिबास पहनने वाला मर्द आख़रत में इससे महरूम रहेगा चाहे जन्नत में चला जाए। (मज़हरी)

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۳۸﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ ۚ
فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ إِلَّا
خَسَارًا ﴿۳۹﴾ قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ أَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا
غُرُوْرًا ﴿۴۰﴾ إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۚ إِنَّهٗ
كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾

आयत नं० 38 से 41

बेशक अल्लाह तआला जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों का, बेशक वो ही जानने वाला है दिलों की बातों का(38) (और) **वो ही ऐसा है जिसने तुम को ज़मीन में आबाद किया** (इसलिए चाहिए तो यह था कि शुक्र करते यानी ईमान लाते और नेक काम करते मगर

कुछ कुफ़्र और दुशमनी पर उतर आए), **सो** (किसी दूसरे का क्या नुक़सान है बल्कि) **जो आदमी कुफ़्र करेगा उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा, और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके रब के नज़दीक नाराज़ी बढ़ाने वाला ही होता है, और काफ़िरों के लिए उन का कुफ़्र** (आख़रत में) **नुक़सान बढ़ाने वाला** (है यानी जन्नत से मायूसी और दोज़ख़ का ईंधन बनना) **है(39) आप** (इन काफ़िरों व मुशरिकों से ज़रा यह तो) **कहिए कि तुम अपने जिन घड़े हुए ख़ुदाओं को अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, बताओ उन्होंने ज़मीन का कौन सा हिस्सा बनाया है या उन का आसमान** (बनाने) **में कुछ साझा है** (ताकि अक़्ली दलील से उनका इबादत में हक़दार होना साबित हो) **या हमने उन** (काफ़िरों) **को कोई किताब दी है** (जिसमें शिर्क के ऐतक़ाद को सही लिखा हो) **कि ये उसकी दलील पर जमे हों,** (नहीं) **बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से सिर्फ़ धोके की बातों का वादा करते आए हैं** (कि इनके बड़ों ने इनको बेसनद ग़लत बातें बता दीं कि वो अल्लाह के यहां सिफ़ारिश करेंगे जब कि उनके बस में कुछ नहीं बस वो इबादत के हक़दार नहीं हो सकते)**(40) सच्ची बात यह** (है कि अल्लाह क़ुदरत वाला ही इबादत का हक़दार) **है कि अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन को** (अपनी क़ुदरत से) **थामे हुए है कि वो अपनी जगह से टले नहीं और अगर** (मान लो) **वो अपनी जगह से हट जाएं तो फिर अल्लाह के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता** (जब उनसे पैदा हुई दुनिया की हिफ़ाज़त नहीं हो सकती तो दुनिया को पैदा करने की क्या उम्मीद की जा सकती है फिर इबादत के हक़दार कहां? तो चाहिए तो यह था कि इन लोगों को अभी सज़ा दी जाए मगर चूंकि) **वो सहार वाला** (है इसलिए मोहलत दे रक्खी है और इस मोहलत में ये हक़ की तरफ़ आजाएं तो सब पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएं क्योंकि वो) **बख़्शने वाला** (भी) **है**(41)।

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ
مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۙ﴿۴۲﴾ اِۨسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَ مَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَ لَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ
اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿۴۳﴾ اَوَ لَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ
فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ
فِى السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿۴۴﴾ وَ لَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى
ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ لٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿۴۵﴾

आयत नं० 42 से 45

और इन (क़ुरैशी) **काफ़िरों ने** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले) **बड़ी ज़ोरदार क़सम खाई थी कि अगर उनके** (यानी हमारे) **पास कोई ख़बरदार करने वाला** (यानी पैग़म्बर) **आए तो वो** (यानी हम) **हर हर उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़ुबूल करने वाले होंगे** (यानी यहूदियों और ईसाइयों की तरह हम न झुटलाएंगे तो पहले से तो यह क़समें खाया करते थे) **फिर जब उन के पास एक पैग़म्बर** (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आ पहुंचे तो बस उनकी नफ़रत ही को तरक़्क़ी हुई(42) दुनिया में अपने को बड़ा समझने की वजह से और बुरी चालें चलने लगे** (यानी घमन्ड की वजह से आप का कहना तो मानते ही न थे बल्कि आप को सताने की फ़िक्र में लग गये)**, और** (ये जो कुछ हमारे रसूल के लिए बुरी चालें चल रहे हैं ख़ुद अपना ही नुक़सान कर रहे हैं क्योंकि) **बुरी चालों का** (असली) **वबाल उन चाल चलने वालों ही पर पड़ता है** (चाहे कभी उस को नुक़सान पहुंच जाए जिसको नुक़सान पहुंचाना चाहा लेकिन वो नुक़सान दुनिया का है लेकिन उन ज़ालिमों पर आख़रत का वबाल पड़ेगा)**, सो** (जो लोग आप को सताते हैं तो) **क्या ये** (अपने साथ भी अल्लाह तआ़ला के) **उसी दस्तूर के इन्तिज़ार में हैं जो पहले** (काफ़िर) **लोगों के साथ होता रहा है** (यानी अज़ाब व बर्बादी) **सो** (बेशक इनके लिए भी ये ही होना है क्योंकि) **आप अल्लाह के** (इस) **दस्तूर को कभी बदलता हुआ न पाएंगे** (कि उन पर अज़ाब की जगह महरबानी होने लगे) **और** (इसी तरह) **आप अल्लाह के** (इस) **दस्तूर को पलटता हुआ भी न पाएंगे** (कि उनकी जगह दूसरों को अज़ाब होने लगे जो ऐसे न हों मतलब यह कि अल्लाह तआ़ला का वादा है कि काफ़िरों को अज़ाब होगा चाहे दुनिया में भी चाहे सिर्फ़ आख़रत में और अल्लाह का वादा सच्चा होता है)**(43) और** (ये जो समझते हैं कि कुफ़्र पर सज़ा नहीं है तो उन की बड़ी ग़लती है) **क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं** (जैसे शाम और यमन के सफ़रों में आद व समूद व क़ौमे लूत की बस्तियां) **जिस में देखते भालते कि जो** (काफ़िर) **लोग इनसे पहले हुए हैं उन का** (आख़री) **अन्जाम** (इसी झुटलाने की वजह से) **क्या हुआ** (कि अज़ाब में पकड़े गये) **हालांकि वो ताक़त में इन से बढ़े हुए थे, और** (किसी में चाहे कितनी ही ताक़त हो लेकिन) **अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई चीज़** (ताक़त वाली) **उस को हरा दे न आसमान में न ज़मीन में,** (क्योंकि) **वो बड़े इल्म वाला** (और) **बड़ी क़ुदरत वाला** (है और दूसरा कोई ऐसा नहीं फिर उसको कौन चीज़ हरा सकती) **है(44) और** (अगर ये इस धोके में हों कि अगर हम को अज़ाब होना होता तो हो चुका होता और इससे अपने शिर्क व कुफ़्र को अच्छा समझें तो यह भी उनकी ग़लती है क्योंकि किसी भेद की

वजह से फ़ौरन अज़ाब नहीं दिया गया वर्ना) **अगर अल्लाह तआ़ला** (इन) **लोगों को इन के** (कुफ़्र के) **कामों की वजह से** (फ़ौरन) **पकड़ करने लगता तो इस ज़मीन पर किसी चलने वाले को न छोड़ता लेकिन अल्लाह तआ़ला उन को तय मुद्दत** (यानी क़ियामत) **तक मोहलत दे रहा है, सो जब उनका वो तय वक़्त आ जाएगा** (उस वक़्त) **अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को आप देख लेगा** (यानी उनमें जो काफ़िर होंगे उन को सज़ा देगा)**(45)।**

नोटः- हज़रत मुहम्मद बिन काब कहते हैं कि तीन काम ऐसे हैं जिन का करने वाला दुनिया में भी वबाल व अज़ाब से नहीं बचता एक किसी बेगुनाह के हक़ में बुरी चाल चल कर उस को तकलीफ़ पहुंचाना दूसरे आम ज़ुल्म करना और तीसरे वादा तोड़ना। (इब्ने कसीर)

36-सूरत-यासीन

इस मक्की सूरत में '5' रूकू और '83' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰسٓ ۚ﴿۱﴾ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿۳﴾ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ؕ﴿۴﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۵﴾ لِتُنْذِرَ
قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿۶﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۷﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ
اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿۸﴾ وَ جَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا
فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۹﴾ وَ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ
اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّ اَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَ نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَ
اٰثَارَهُمْ ؕ وَ كُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْۤ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۠﴿۱۲﴾

आयत नं० 01 से 12

यासीन (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **क़सम है हिकमत भरे क़ुरआन की** (02) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **बेशक आप पैग़म्बरों में से हैं**(03) (और) **सीधे रास्ते पर हैं** (कि इसमें जो आप के पीछे चले अल्लाह तक पहुंच जाए न कि जैसा काफ़िर कहते थे कि आप पैग़म्बर नहीं या यह कहते थे कि यह कलाम तो आप ने खुद घड़ लिया है)(04) **यह क़ुरआन** (तो) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले और) **महरबान अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है**(05) (और आप पैग़म्बर इसलिए बनाए गये हैं) **ताकि आप** (शुरू में) **ऐसे लोगों को** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराएं जिन के बाप दादे** (क़रीब ज़माने में किसी पैग़म्बर के वास्ते से) **नहीं डराए गये थे सो इसी लिए ये अन्जान हैं**(06) (और ये लोग जो नहीं मानते तो आप इसका ग़म न कीजिए क्योंकि) **इनमें अक्सर लोगों पर यह** (नसीबी) **बात साबित हो चुकी है** (कि ये सीधे रास्ते पर नहीं आएंगे) **सो ये लोग हरगिज़ ईमान नहीं** (लाएंगे अलबत्ता कुछ लोग ईमान) **लाएंगे**(07) (और इन लोगों की मिसाल ईमान से दूरी में ऐसी हो गई कि जैसे) **हम ने उन की गर्दनों में** (भारी-भारी) **तौक़** (यानी

पट्टे) **डाल दिये हैं जो ठोड़ियों तक** (पहुंच गये) **है जिससे उन के सर ऊपर को उठे रह गये हैं** (नीचे को नहीं हो सकते जिससे वो रास्ता नहीं देख सकते)(08) **और** (ऐसे ही उनकी मिसाल ईमान से दूरी में ऐसी हो गई कि जैसे) **हम ने एक दीवार उनके सामने कर दी और एक दीवार उनके पीछे कर दी जिससे हम ने** (हर तरफ़ से) **उन को** (पर्दों में) **घेर दिया सो वो** (इस पर्दों के घेरे की वजह से किसी चीज़ को) **नहीं देख सकते**(09) **और** (इसलिए) **उन के हक़ में आप का** (अज़ाब से) **डराना या न डराना दोनों बराबर हैं ये** (किसी हालत में भी) **ईमान नहीं लाएंगे** (इसलिए आप उनकी फ़िक्र न करें)(10) **बस आप तो** (ऐसा डराना जिससे फाइदा हो) **सिर्फ़ ऐसे आदमी को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और अल्लाह से बेदेखे डरे** (कि डर ही से हक़ की तलाश होती है ये डरते ही नहीं) **सो** (जो डरने वाला हो) **आप उस को** (गुनाहों की मुआफ़ी) **और** (नेक कामों पर) **अच्छे बदले की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए** (और इसी साबित हुआ कि गुमराहों को सवाब की जगह अज़ाब होगा)(11) **बेशक हम** (एक दिन) **मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे** (उस वक़्त सब कुछ सामने आजाएगा) **और** (जिन कामों पर सवाब या अज़ाब होगा) **हम** (उन को बराबर) **लिखते जाते हैं वो काम भी जिन को लोग आगे भेजते जाते हैं और वो काम भी जिन** (के असरात) **को पीछे छोड़ जाते** (हैं यानी वो अच्छाइयां या बुराइयां जो बाद में फैलती) **हैं, और हम ने** (तो) **हर चीज़ को** (जो कुछ क़ियामत तक होगा होने से पहले ही तक़दीर की) **एक खुली किताब में लिख दिया था**(12)।

नोटः- एक हदीस में है कि ''जिस आदमी ने कोई अच्छा तरीक़ा जारी किया तो उसको इस का भी सवाब मिलेगा और जितने आदमी उस तरीक़े पर अमल करेंगे उन का भी सवाब उस को मिलेगा बिना इसके कि उन अमल करने वालों के सवाब में कोई कमी आए। और जिसने कोई बुरा तरीक़ा जारी किया तो उसको इसका भी गुनाह होगा और जितने आदमी जब तक उस बुरे तरीक़े पर अमल करते रहेंगे उस का गुनाह भी उस को होता रहेगा बिना इसके कि अमल करने वालों के गुनाहों में कमी आए। (इब्ने कसीर)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا
بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا

بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ
اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ جَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا
يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

आयत नं० 13 से 21

और आप इन (काफ़िरों) **के सामने** (नसीहत के लिए) **एक ऐसी बस्ती वालों का क़िस्सा बयान कीजिए, जबकि उस बस्ती में कई पैग़म्बर आए(13) यानी जब कि हम ने उन के पास** (शुरू में) **दो को भेजा सो उन लोगों ने दोनो को झूटा बताया फिर तीसरे** (पैग़म्बर) **से** (उन दोनो की) **ताईद की** (यानी उनकी हिमायत के लिए फिर तीसरे को वहां जाने का हुक्म दिया) **सो उन तीनों ने** (उन बस्ती वालों से) **कहा कि हम तुम्हारे पास** (अल्लाह की तरफ़ से) **भेजे गये हैं** (ताकि तुम को समझाएं कि एक अल्लाह को मानो और बुत परस्ती छोड़ दो)**(14) उन लोगों ने** (यानी बस्ती वालों ने) **कहा कि तुम तो हमारी तरह** (सिर्फ़) **एक आम आदमी हो** (यानी पैग़म्बर नहीं) **और** (तुम्हारी क्या ख़ास बात पैग़म्बरी ही कुछ नहीं और) **अल्लाह तआला ने** (तो) **कोई चीज़** (यानी किताब कभी) **उतारी** (ही) **नहीं तुम सब झूट बोलते हो(15) उन पैग़म्बरों ने कहा कि हमारा रब ख़ूब जानता है कि बेशक हम तुम्हारे पास** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजे गये हैं(16) और हमारी ज़िम्मेदारी तो सिर्फ़** (हुक्मों का) **साफ़-साफ़ पहुंचाना था(17) वो लोग कहने लगे कि हम तो तुम को मनहूस समझते हैं** (या तो इस लिए कहा कि बारिश न होने से सूखा पड़ा था और या इसलिए कहा कि आपस में फूट पड़ गई थी क्योंकि कुछ लोग ईमान लाए बाक़ी लोग उन के दुशमन हो गये और) **अगर तुम** (इस नसीहत के काम से) **बाज़ न आए तो** (याद रक्खो कि) **हम पत्थरों से** (मार-मार कर) **तुम्हारा काम तमाम कर देंगे और** (पत्थर बरसाने से पहले भी) **तुम को सख़्त सज़ाएं देंगे** (यानी और तरह-तरह से सताएंगे नहीं मानोगे तो पत्थर बरसा कर मार डालेंगे)**(18) उन पैग़म्बरों ने कहा तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ ही लगी हुई** (है यानी जिस को तुम नुक़सान व मुसीबत कहते हो उसकी वजह हक़ बात का न मानना है अगर मान जाते तो न ये झगड़े होते और न सूखे के अज़ाब में पकड़े जाते पैग़म्बर के आजाने के बाद उसको न मानना अल्लाह के अज़ाब को दावत देना) **है, क्या इस को नुहूसत समझते हो कि तुम को नसीहत की जाए,** (नहीं) **बल्कि** (असल बात यह है कि) **तुम** (ख़ुद अक़्ल व शरीअत की) **हद से निकल जाने वाले लोग हो** (बस शरीअत की मुख़ालफ़त से तुम पर यह नुहूसत आई)**(19) और** (जब यह बात फैली तो) **एक आदमी**

(जो मुसलमान था) **उस शहर की किसी दूर जगह से** (क़ौम को समझाने के लिए) **दौड़ता हुआ** (यहां) **आया** (और उन लोगों से) **कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम इन पैग़म्बरों के रास्ते पर चलो**(20) (ज़रूर) **ऐसे लोगों की राह पर चलो जो तुम से कोई बदला नहीं मांगते और वो ख़ुद सही रास्ते पर** (हैं यानी फिर इन का कहना क्यों न माना जाए जब कि ये लालची भी नहीं और सही रास्ते पर) **हैं**(21)।

नोटः- क़ुराने करीम में उस बस्ती का नाम नहीं बताया गया है जहां वो पैग़म्बर भेजे गये और न उन बुज़ुर्ग का नाम बताया गया है जो उन पैग़म्बर की ताईद में उस बस्ती वालों को समझाने के लिए आए थे।